

१	७३८८
१५२५६१५६	

276
Cānakya

॥ श्रीचानक ॥

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ ५ ॥

॥ १ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ परमेश्वरमाविष्णुत्रैलोक्याधिपतिप्रभु ॥ नानाशा

स्त्रोद्धतवक्ष्ये राजनीतिममुच्यते ॥ १ ॥ त्रैलोक्याकाशधिपतिश्रीविष्णुकनन

मकारगौरि चानककरीषिश्चरन् नानाशास्त्रमाहिरिकन राजनीतिआज्ञागच्छन्

॥ १ ॥ अधिपतिं मिदं शास्त्रं नराशास्यति न टतो ॥ धर्मो पदं शविनये कार्या

कार्यशुभाशुभं ॥ २ ॥ जो मनुष्यते यो शास्त्रादिमात्र यो धर्म यो अधर्म यो व

द्विधा काम यो धीर्या कामहे यो गुरु यो न गुरु यो ज्ञान उपदेशो दिना को सा

मर्थ होला ॥ २ ॥ नदहं संपवक्ष्यामि नराणां दिनकाश्या येन प्रज्ञा प्रवर्द्धते श

मते वै हितकारीणी ॥ ३ ॥ मनुष्यको हितगर्नाकन चानककरीषिले आज्ञागच्छन्

न जमनुष्यले यो शास्त्रमुक्ता विचारगता आमाते पाप्यो ह यो शास्त्रले

॥ ५ ॥

॥ १ ॥

॥ १ ॥

॥ १ ॥

पोष्याच्छन् ॥ ३ ॥ मूलमुत्र प्रवक्ष्यामि चानकेन तु भाषितं येन विज्ञातमोक्षन सर्व

ज्ञत्वं हि जायेत ॥ ४ ॥ चानककरीषिले आज्ञा पुनकन कहच्छन् हे उच हो सुन यो शा

स्त्रपद्या पीछे सर्वे शासनोत धर्म अधर्म शुभ अशुभ ज्ञायां दुष्ट ॥ ४ ॥ सुखे शिष्या प

देशेन दुष्टा ह्यो भर्गोन च ॥ द्विषतां संप्रयोगेन परिदत्तोपवसीदति ॥ ५ ॥ सुखे र

शिष्यकन उपदेशो ध्याको ॥ दुष्टका मिलान्द गद नाध्याको ॥ शत्रुमित्र शीत गर

राव्यथे दुष्ट ज्ञाने परिदत्त भथापाने नाति ॥ ५ ॥ गुणिभिर्महसंपद परिदत्ते स

हसंकथा कुलिभिर्महमित्रत्वं कुर्वीता नानावसीदति ॥ ६ ॥ गुणिकमानि सुमित्र

मंगदगुरु परिदत्त मित्रकथा वाद्यगुरु कुलवर्ती ममिन्तु लघु सुमित्राया पीछे यो

मनुष्य के हे परो विगर्तेन ॥ ६ ॥ उचताता भुजंगानां मद्यपाना च दत्ता ॥ ७ ॥ शीत गर

॥ क ॥

॥ १ ॥

कलानां च विश्वासं निगतायुषः ॥ ७ ॥ बहुलासित-सर्प-सित-सन्तु-नासित-होति
सित-स्वा-स्ना-सित-गज-कुली-सित-विश्वामगया-आयुष्य-वृद्ध-॥ ८ ॥ वैरिनां सह-वि-
श्रान्त-यान-र-कुर्वु-मिच्छति ॥ सद्यो-यु-स-सु-प्र-प्रति-प्रति-वु-द्यते ॥ ९ ॥ वैरि-ग-ज-सु-ध-
लि-विश्राम-ग-य-विश्राम-सु-र-र-के-नु-प्या-मा-व-स-नि-द-ई-र-ध-वा-त-स-स्या-प-धि-नि-दा-या-
का-वु-दि-य-ला ॥ ८ ॥ धन-ध-न-प-यो-ग-यु-विश्राम-य-ह-रा-यु-च ॥ आ-ह-रे-य-व-ह-रे-य-त-त-
ल-ज-पा-स-दा-भ-वे-त ॥ ९ ॥ धन-क-मा-उ-दा-मा-विश्राम-ध-मा-ख-ना-मा-व-व-हा-र-ग-दा-सि-
ति-ध-न-क-मा-ल-ज-ग-न-मा-नु ॥ ९ ॥ न-ग-र-स-द-श-मा-ता-न-ग-र-स-द-श-पि-ता-य-त्रे-र-ते-
म-ह-धि-र-स-स-द-श-पि-द-द-र ॥ १० ॥ गुरु-ज-नि-को-आ-मा-प-ने-छे-न-गुरु-ज-नि-को-वा-वा-
प-ने-छे-न-क-दा-ह-भ-या-आ-मा-वा-व-ले-ज-न-य-न-व-दि-द-र-गुरु-ज-नि-सं-सार-स-मु-द्र-ता

॥ राभा ॥

॥ २ ॥

रि-दि-न-स-क-र-त-स-अ-र्थ-ले-गुरु-ठ-लो-छ-र ॥ १० ॥ मा-त-ग-गा-स-म-ती-र्थ-पी-ता-पु-र-
र-ग-व-च-गुरु-के-ड-र-स-म-ती-र्थ-मा-त-ग-गा-पु-न-पु-न ॥ ११ ॥ आ-मा-भ-या-का-ग-गा-ता-
र्थ-ज-मै-दु-र-वा-वा-भ-या-का-पु-र-र-ती-र्थ-ज-मै-दु-र-गुरु-भ-या-का-के-ड-र-ती-र्थ-ज-मै-
दु-र-आ-मा-ला-ई-वा-र-वा-र-ग-गा-न-मा-नु ॥ ११ ॥ वि-श्राम-प-कुरु-पा-रा-ध-मा-रु-प-त-पा-सि-
न-को-क-ला-नां-स्व-र-रु-प-न-रि-रु-प-प्र-ति-व-ता ॥ १२ ॥ कुरु-प-को-रु-प-वि-श्राम-हो-त-पा-सि-
को-रु-प-ध-मा-हो-को-क-ले-को-रु-प-स्व-र-हो-स्त्री-को-रु-प-प्र-ति-व-ता-ध-मा-हो ॥ १२ ॥ न-च-वि-
श्राम-मा-व-धु-न-च-वा-ध-स-मा-र-ज-न-चा-प-न-य-स-म-ह-न-च-दे-वा-त-र-व-र ॥ १३ ॥
वि-श्राम-ज-नि-को-आ-कु-भा-ई-मि-त्र-छे-न-रा-ग-ज-नि-को-अ-को-श-वु-छे-न-छा-ग-ज-नि-को-पि-
पा-र-अ-रु-छे-न-दे-व-ज-नि-को-व-लि-यो-अ-रु-छे-न ॥ १३ ॥ वि-श्राम-व-सि-नो-मि-त्र-भा-य

॥चाक

॥३॥

मीत्रगृहेषु च ॥ आनुरस्योऽयं मित्रं धर्ममित्रं पात्रं च ॥ १४ ॥ परदेशको मित्रविद्या हो
यको मित्रस्वाध्या हो रागको मित्र ओसधी हो परलोकको मित्र धर्म हो ॥ १५ ॥
दुराधीता विषय विद्या अजीर्ण भोजन विषय ॥ विषय गोष्ठि दीरद्वय ॥ दृष्ट स्यतरणी
विषय ॥ १५ ॥ अभ्यास छान्दा पाठ ॥ यज्ञाको विद्या पात्र विषय दुष्ट न पात्र विद्या यको अ
त्रपनी विषय दुष्ट कंगाल भया पाठि दाज्य भाई विषय दुष्ट ॥ बुढाको तरुणी स्वा
स्ती विषय दुष्ट ॥ १५ ॥ अनाभ्यासे हता विद्या नित्य हासे हता ॥ स्त्रीय ॥ कुवीर्जन हत क्ष
त्रं भूयदो स हता नृप ॥ १६ ॥ अभ्यास छान्दा पाठ ॥ यज्ञाको विद्या न मिच्छ ॥ सदेह
स्यापि छ ॥ स्वास्ती नासि ॥ व्यपटि या पया पाठि र्वित नासि छ ॥ मन्त्रोद्योदिया पया रा
जानासि छ ॥ १६ ॥ यद्यपुत्रो नीव दां सो न भूत न च परादि न ॥ अर्धकालं कुत स्य न ह

रक्त

त

३

राम

३

चन्दुव शर्वरी ॥ १७ ॥ जस्को छारा बुद्धि व चर्पनी भयन ॥ भुगपनी भयन पीरिडन पनी
छेन ॥ तस्को कुलमा अथोरा होला ॥ चन्दुमान भयाकारा ॥ जस्को हो ॥ १७ ॥ शर्वरी
दीपक चन्दु प्रभाते रवी टिपक ॥ त्रैलोक्य टिपको धर्म सुपुत्र कुल टिपक ॥ १८ ॥
गर्भिका दीप चन्दु मा हो ॥ दिनको टिप सूर्य हो ॥ त्रैलोक्यको टिप धर्म हो ॥ कुलको
दीप सुपुत्र हो ॥ १८ ॥ जनयिनी पेन ता च यस्को विद्या पय छति ॥ अत्र दाना भयदा
ता पचेते पात्र रस्यता ॥ १९ ॥ आफु जन्मा दुन्या चालना गन्या ॥ विद्या पहा दुन्या ॥ अ
त्र यानी टन्या ॥ भयमारक्षा गन्या ॥ इ पाच जना वावु भन्नु ॥ १९ ॥ गुरुपत्नी राजपत्नी
मित्रपत्नी तथैव च ॥ पत्नी माता स्वमाता च पचेते मातर रस्यता ॥ २० ॥ गुरुका स्त्री ग
जाका स्त्री ॥ मित्रका स्त्री ॥ आहु म हतार ॥ एतया च आमा भन्नु ॥ २० ॥ लालयन्य

आमा स्त्री नीको आमा

ॐ जस्मनुयका विद्या पद्मामा ३४ अभासकृत तत्त्वो ज्ञानभयापनी न भयाप

॥ ना० क
॥ ४ ॥

चवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत् ॥ संप्राप्तेषां दशवर्षे पुत्रमिव वडाचरेत् ॥ २१ ॥
पाचवर्षे दुःखालसंमोहाकनलासनागने दशवर्षे समसासनागने मोहवर्ष
भयापिष्ठ पुत्रकनमित्रे मे मातु ॥ २१ ॥ लालना दहवाटोया स्नादना दहवागुणा
नस्मान् पुत्रचक्षिष्य च ताडयेत् ननु लालयेत् ॥ २२ ॥ छोराकन क्षिप्यकन आश्र
स्वसमंगरेव लनटियाको वडावेगुणा ॥ तस्कारणा छोराकन रक्षिष्यकन ताड
ने गद्यागुनपछि ॥ २३ ॥ रुचिराभ्यासयास्यानां पुत्रयां को पुत्राजनं तावुभायादन
ह्यां तां पुत्रयां किं पुत्राजनं ॥ २४ ॥ पुत्रास्त विवोर्षे शास्त्रे निगो ज्ञाशततं वुधे
नितीशां बुद्धि संपन्ना भवन्तोऽखलपूजिता ॥ २५ ॥ ज्ञानिमनुष्यान् छोराकन मास्य
पहाडुनु शास्त्रज्ञानापीछि ॥ नीतां जाटडुनु वीछेडुडु सैलोकल मोच्यग
कश जस्को पडुमाइ हा अभ्यास दुवछेनत ज्ञानभयालेकगंगे ॥ २६ ॥

गाम
॥ ४ ॥

गहना मिछिहा ॥ धनको गहना दान भागहा ॥ ३० ॥ सुकुले योजयत् कन्या पुत्री वि
द्यासु योजयत् ॥ व्यसने योजयत् च मित्रधर्मणि योजयत् ॥ ३१ ॥ कन्यादि नृपे स
कुलमा छोराकन माने देयिमास्त्रमालावनु ॥ शत्रुकन प्रीतिमालावनु ॥ मित्र
कन धर्म मालावनु ॥ ३२ ॥ नान्यु चक्षिष्ये मिह नातिनो सुस्मातरा ॥ व्यवसा
यमहायानां नातिपारा मदादि ॥ ३३ ॥ उपायलेता सुमेरु पर्वत पनि ॥ अग्लो
छत्र पाताल पनि ॥ गोहाथेन समुद्र पनि पावजु सुसकी छ ॥ तस्कारणा ज्ञानी म
नुष्यले उद्यमने छानु ॥ ३४ ॥ श्राकेन चतदृष्टेन पाटेने काक्षे रगावा ॥ अवध
टिवसं कुथ्य छाना ध्ययनकमसु ॥ ३५ ॥ अविधि न गारि ॥ एक श्राक भयाप
नी ॥ एक चरणा भयापनी ॥ एक अक्षर भयापनी ॥ पर्वे रहनु ॥ सदा अविधि

॥ चाना ॥

॥ दं ॥

त्रागयापीष्ट विद्यापार डूछ ॥ ३३ ॥ योजनानां स्त्रहस्वागो वृजन्त्याति पिपी ॥
लिका ॥ अगच्छन्वेनेतयोपि पद मेकं न गच्छति ॥ ३४ ॥ अभ्यासं न ह्यडियाप
छि किमोत्तमोपने ॥ हज्जारजोजन् जोहनु ॥ अलीसभयापीष्ट ॥ गरुड ले पात्रिकेने
जानसकदेननु ॥ ३५ ॥ शनैरथो शनैर्विद्याः शनैः पवनमारुहं ॥ शनैर्धर्मश्च कामश्च
व्यायामश्च शनैः शनैः ॥ ३६ ॥ धननुत्याउदासाविद्या परां मा ॥ पवनचठदा ॥ धर्मगदा
मा ॥ किं हि उ शमगदामा ॥ विस्मयः ॥ गौर कामपुट हनु ॥ चाडोगयाले डूदेन ॥ ३७ ॥
गुरुश्च श्रययाविद्या ॥ पुष्कलेन धनेन वा ॥ अथवा विद्यायां विद्या चतुर्थे नो पलभ्यते ॥
३८ ॥ विद्यालिउतिनर्थो कमात्र डूछ ॥ काकाभन्या ॥ गुरुकाम्यवागार ॥ अधवा ॥ ॥ राम ॥
धनदिकन ॥ किन विद्या लि विद्या सातेकन ॥ यतिनिरर्थो कले मात्र विद्यालिउ डूछ
सोथो उपायले विद्या पाडू न्या देन ॥ ३९ ॥

ले

सकाक्षरपुदा नारं योगुरुं नाभिवंद्यते ॥ धानयेति शतं गत्वा चागडाले सभि
जायेत ॥ ४० ॥ सके गोटा भक्षर पहाउन्याकनयनि जागुरुमान्यो न सा शययोनी
क कुरु भे फेरि चागडाभे जन्म डूछ ॥ ४१ ॥ एतकं प्रतिपादीतो नादीतो ॥ गुरुमचीधो
नमोभन ॥ सभामध्यजालगभ इवस्त्रिय ॥ ४२ ॥ गुरुकु उनपीहि पास्तक मात्रे हरि
पह्यामनुष्यकन जाभा डूदेन ॥ कशाभन्या जालगभे डूछ ॥ ४३ ॥ ॥ सिरुपशेन मजाल
स्या परिडन्य मित्रमं गुरु ॥ अचोर हरणी विद्या पंचते अक्षयानिधि ॥ ४४ ॥ मि युमि
छाहुनु ॥ आलस्यभं ॥ शोखप डूछ ॥ मित्रनुत्याउनु ॥ ऐतिथोक ॥ नौरले पात्रि चारि
ले जालु सकदेन ॥ अक्षयधनहो ॥ ४५ ॥ नहि जमनि जे हत्तं ॥ जे हत्तं गणमुच्यते ॥

॥ चान ॥ गुणा दुशा तरं यांति पयोदधि घृतं यथा ॥ ४० ॥ अन्यको जे ठो जे ठो न भंनु गुणा के ज्ये ठो हो ॥
॥ ७ ॥ कान भया दुद दहि ना को घी उ जे ठो हो ॥ ४० ॥ किंकुलेन विशालेन गुणा वान् पुजितो नर ॥
 नुर्वज विभु हो पिनि गुणा किंकरी यति ॥ ४१ ॥ वडा कुल मा जन्म भयाले क्यो दुष्ट गुणा
 ज्ञान न भया का मुनु थ्य धनुर्वज राजा का कुल मा जन्म भयापनि निर्गुरा को के
 हि प्रिया जन छे न ॥ ४१ ॥ किंकुलेन विशालेन विशादिन स्तुयो नर ॥ अकुलि नोपि वि
 दानो देवते रपि पूजते ॥ ४२ ॥ कुल वत्त मान भयाले क्यो प्रयो जन छ ॥ विशान भ **॥ राम ॥**
 यापछा विशा भयात अकुलि यात यनि देवा तो हे गीर मान द छ न ॥ ४२ ॥ नावा **॥ ७ ॥**

र्थो च भवे विशा यावत्पारं नगा छेति ॥ उनीरां च गति पार नो कायां को प्रयो जन ॥ ४३ ॥
 विशार समुद्र को नाम ए के हो समुद्र नतीर ज्वाल नाव चा हि छ समुद्र न याप
 छि ॥ नाव को को प्रयो जन छ ॥ ४३ ॥ गुणा सर्वत्र पूज्यते पितृवंशो भिषक वासु
 देव नमस्यन्ति वसुदेवं नतजना ॥ ४४ ॥ समस्त धार मा गुणा को पूजा गछे न वावु
 छे रि भयाले हु देन क्यो हो भया श्री कृष्ण को सर्व पूजा गछे न ॥ वसुदेव कन
 को हि पूजा गदे न ॥ ४४ ॥ गुणा कुर्वन्ते दु रत्नः दूरे पि वसुना सता कत कि ग
 थमा प्याय स्वयं गच्छति सद पदा ॥ ४५ ॥ गुणिक मनुष्य टाळा वर्या पिनि मज्ज

चा. न॥

॥७॥

नमस्तुभ्यो विष्णवे पुष्टं च न॥ केतकि फलका वासना पाई कन॥ भयरा रूचमा पुष्टं च न॥ ४५॥

विद्याच च नृपत्वं च॥ नहि नृत्य पशक म॥ खदेशे प्रतिनो राजा विद्या सर्वत्र प्रतिनो॥ ४६॥ रा

जा विद्या पदं याको वीरवा पशक म॥ देन राजा कन॥ आक्रोदे श मा सोत्रे॥ मायग

गर्भे न॥ विद्या पशक न॥ सर्वे मा उभय ग॥ देन॥ त रुका रगा विद्या तु लो हो॥ ४७॥ सेके

नापि सुपुत्रे रा विद्या युक्ते न माधना॥ कुल पुरुष॥ सिंह न च द्ये नैका प्रकाश्यते॥ ४८॥ च

सुपुत्र विद्या वचन माध॥ एता पुरुष सिंह ले एके पुत्र ले॥ पाने च द्यु माले रात्रि प्रका

सग योहे॥ कुल को प्रकासा ग॥ गर्भे न॥ ४९॥ विद्या या भाजनं कश्चि न॥ कश्चि न॥ व्याय भा

भयस॥

॥७॥

जनं उभया भाजनं कश्चि न॥ कश्चि न॥ भयभाजनं॥ ४८॥ मनुष्य का विद्या का

भाडा छन॥ कोही मानि मृधन का भाडा छन॥ कोही मनुष्य छे उ दुवै थोक

छन॥ कोही मनुष्य छे उ दुवै थोक छे न॥ ४९॥ नमोति फलिनो तत्त्वा नम

नि गुणि गो जना शुक्ल कायं च मूर्ख च॥ भिद्यते नैव मत्यते॥ ४९॥ फल

फल्य को रुच न मृतं दु॥ मज्जन पाने न घृतं दु॥ सुखा को काठर॥ मूर्ख

वरो वरु॥ वरु भाग्य छन॥ नमृतं दु॥ देन॥ ४९॥ नहि का माणि चत्वारि॥ भ

ध्याका जे प्रयोजयत॥ आहोरो मेधुनं निद्रा तथा स्वाध्याय मेव च॥ ५०॥

॥ वाक ॥ सतिचारिणो क काम सन्ध्यां लज्जा नगं कया भवत्या आहार लोभ भोग निद्रा पदं ५०
॥ २ ॥ आहार जायत व्याधिं गंभीरं नृकृशं जायते अजयं लोकं शय्याय समठावादायुव
 क्षय ॥ ५१ ॥ सन्ध्या काल म सन्ध्या शोभि ह्य स्त्री भोग गन्धा कुपुत्र जन्म ह्य निद्रा
 गन्धा धन नाम ह्य पाठ गन्धा भायु घट ह्य ॥ ५२ ॥ वेदे वेदाग तत्त्वज्ञो जप होम पराय
 ण आर्तिर्वाट पेश नित्य मेखराश पुण्य हित ॥ ५३ ॥ वेदे वेदाग तत्त्वज्ञान्या जप हो
 म क्रिया जान्या आर्तिर्वाट दिं दे रहन्या एता ग्राह्य गाकन राजा जे पुण्य हित नृत्त
 वनु ॥ ५४ ॥ प्रातः ध्याये महिषा तक्षक दुर्कर्म विवर्जित विधौ च परित्यागि सम दुःखं सम
 सुख ॥ ५५ ॥ ज्ञानिको मल साधु काम न गन्धा आपत् पदं मा

राम ॥
 ॥ २ ॥

त्याग गन्धा सुख दुःख वशो वर मान्या रुक्मा कन राजा तुल्या वनु ॥ ५६ ॥ कल
 शिल गुणो पत सत्य धर्म परायणा प्रविणो ज्ञे ज्ञो दक्षो राजा धर्मो भो धियते
 ॥ ५७ ॥ शील गुणा वनः धर्मो न्याः सत्य वादि चतुर विचक्षेत्र क्षमा वन सर्वे सा मर्थ
 ले युक्त भयाको रुक्मा कन राजा तुल्या वनु ॥ ५८ ॥ कुर्या सनि नृत्त अपग
 भम नाज व ॥ भगव्य यक नो रं नाधि पत्ये नियो जयेत ॥ ५९ ॥ रि सा हा जुवा
 न्या लोभि अज्ञानि कपति नाहा कमाय व गन्धा आमे दाने न होरि यव
 गन्धा रुक्मा कन राजा न तुल्या वनु ॥ ६० ॥ सलं हनि हि तो धीर सर्व रत्न परि

॥ वा क ॥ एक शुचिश्च व्यवसायी च धर्माध्यक्षो विधीयते ॥ ५६ ॥ कोटिका जभया पाने वि
॥ ५७ ॥ दानगारि गन्या धैर्यवान् सर्वेश्वरको पारिधा जान्या व्यवसायि शुचो मरुताकन
 विचारि तुल्यावतु ॥ ५८ ॥ आर्यवेदकृता भ्यास सर्वतः प्रियदर्शन आर्यशील गु
 गोपित सर्ववेशो विधीयते ॥ ५९ ॥ कालज्ञान वेदाग जान्या नारिको पारिधा जान्या
 सर्वेक्षितो मूलन्या शीलसो भाववोक्त्या भयाको मरुताकन वै शतुल्यावतु ॥ ६० ॥
 प्रियपितामहोदधौ शास्त्रज्ञा मिथु पाचक शुचिश्च कथितेन शैव सुपकार प्रश
 स्यते ॥ ६१ ॥ वातवगन्तु देशो विचक्षेणा शास्त्र जान्या मिथोगारि पकारुन्या स

॥ राम ॥
॥ ५७ ॥

मरुताकन भाव्या तुल्यावतु होला ॥ ६२ ॥ मरुतु कृत्तु होता थो लहम्मा जिताक्षर
 सर्व शास्त्र समालोको मरुतु लवक च्यते ॥ ६३ ॥ एकै त्रै मुनी मात्र अर्थ बुद्ध
 न्या चाडोले सन्या रामा अक्षर गराउ न्या सर्वेश्वर जान्या मरुताकन यदि
 डार तुल्यावतु ॥ ६४ ॥ इडि ताकार तत्त्व ज्ञा वलवान् प्रियदर्शन अप्रमादि
 सदादक्ष प्रीतिहार मउच्यते ॥ ६५ ॥ जरको अनुसार जान्या बलियो सर्वेक्षि
 त मिलन्या देहि कुरा जान्या अति चतुर भयाका मरुताकन हरिदार् तुल्या
 वतु ॥ ६६ ॥ समर्थ कृत शास्त्रज्ञ पारिधन शुभिता श्रम धैर्य शौर्य गुगोपित

॥चा०का॥ सेनाध्यक्षो विधीयते **॥६१॥** इत्ताकता समर्थ समस्त शास्त्रज्ञान्या विचक्षेणा
॥११॥ परिश्रमभयाको धैर्यवत्त श्रेष्ठ भयाको सुस्माकन काङ्क्षितु न्यावतु **॥६२॥**
 समस्त हयशास्त्रज्ञो बाहनस्य पराजित शौर्यविर्य्य गुणापेन अध्याध्य
 क्षो विधीयते **॥६३॥** सर्वे घोडाको परिक्षा जान्या घोडाका वतह जान्या शुभो
 गुणावत्त सुस्माकन अभुवारि तु न्यावतु **॥६४॥** से प्रीवीवाक पदः प्राज्ञ प
 रचितोपनिषत्क धीरोयथा कवटिच सुयदता विधीयते **॥६५॥** वोलि वेश
 जान्या अर्काको मनवाधगन्या धैर्यवत्त भयाको कुरायथाथ गन्याः य

राम **॥**
॥११॥

स्माकन उकीलतु न्यावतु **॥६६॥** पार्थिवस्य च भृत्यस्य वटो मिगुशालक्षणा यन
 संवक्षते राजा भागडागार स्तथेव च **॥६७॥** राजाल बाकरको गुशालक्षणा वि
 चार गक्षाभा जश्रेराजाकन वटा उछ ल्यो भराडार गतु **॥६८॥** अतय वकुली ना
 ना दटा कुर्वति संग्रह **॥** आदि मध्या वसाने यु नेतया स्यंति विविक्तिया **॥६९॥** एस्मा
 तरही सत कुलवन सोजि काममालावन ल्यो मनुष्य कः रुपाने विगर्देन **॥**
॥७०॥ परिदते सुगुणा सर्वे सुखदोषास्तक वला तस्मा सुखं सहस्रेभ्य प्राजय
 क प्रशस्यते **॥७१॥** क्षान्तिपरादित मनुष्य छउ सर्वेथोव गुणा ऊ छ सुख छ

॥ वा० क० ॥ उमवेधो कवे गुणा ऊँ छ तसर्थ हज्जार मुख छोदि ज्ञानियक साथ जिन
॥ १२ ॥ ६६ ॥ प्राज्ञनियो ज्यमाने तु सन्निराज्ञरूपे गुणा यज्ञ स्वर्गनिवासश्च पुष्कर
 अधनागमा ॥ ६७ ॥ क्षान्तिजनकन काजमालायापछि राजाकोतिन गुणा प्राप्नु
 छ यशवर्द्ध छ स्वर्गवाश पाउछ लक्ष्मी हाडि दुँछ ॥ ६८ ॥ मूर्खनियो ज्यमान
 तु चयो दोषा मोहयेते अयशश्चाथ नाशश्च नरके पतनं कुर्वे ॥ ६९ ॥ मूर्खकन का
 जमालायापछि राजाकनति नृदाय प्राप्नु छ अपजस पाउ छ लक्ष्मी नाश हु
 छ परच नरक वाश हुँ छ ॥ ७० ॥ तस्माद्भूमि धरो मात्य धर्मकामार्थं हृदये

॥ राम ॥
॥ १२ ॥

गुणावन्नियो ज्येत्य गुणाहीनं विवर्जयेत् ॥ ७१ ॥ तस अर्थ राजाले धर्मकाम धन
 बढाउना निमित्त गुणावन्न मंत्रीहीर काजमालावन गुणानभयाका कन छोड
 नु ॥ ७२ ॥ यत्कीचित् कुरुते भृत्य शुभं वा यदि वा शुभं तेन सवर्द्धते राजा सुहृते
 दुस्सुते रणे ॥ ७३ ॥ गुणावन्न काजमालायापछि शुभाशुभ काज ज्यागरेरूपमि
 राजाकन लक्ष्मी हाडि दुँछ ॥ ७४ ॥ यथा हेम परिक्षेत तापना डर छेदने तथा
 पुरुष मयेव कुलशिलेन कर्मणा ॥ ७५ ॥ जस्तै सुनको परिक्षा आगोमा
 यालि काटि घनले थिचि हेर्छन् तस्तै गौर ॥ कुलस्वभाव कर्मले मनुष्य को

॥ वा० क॥ परिशागनु **॥ ७१ ॥** ज्ञानव्यप्रक्षरो भृत्या बांधवो व्यसना गमे आयत्काले तथा
॥ ७२ ॥ मित्रं भार्या च विभवक्षये **॥ ७२ ॥** रावको त्रिकोत्रनिको कामपथाई हेनु इष्ट
 मित्रहेनु विपतिमा तस्मै विपतिमा मित्रहेनु कंगाल दुदा र्वो आफु
 किछेन भनिहेनु हो **॥ ७२ ॥** भृत्यावडु विधाराज उत्तमाधम मध्यमा न्यनियो
 यथायोग्या स्थिविधे सेवक मस **॥ ७३ ॥** त्रिकोत्रनिका सेवक ठरे तरुकाहु
 छनु त्यस्मा भला मनुष्यकन भलाकाज सालावनु मध्योकन मंदका म
 सालावनु मध्यम कन मध्यमकाज सालावनु **॥ ७३ ॥** आलस्य सुखरं कुर

ज्या

॥ राम ॥

॥ ७३ ॥

स्तव्यमनिनकाठं असनुक्षयभक्तं च न्यजेदुत्तमं नराधीप **॥ ७४ ॥** अलीसिक
 रा गन्या रिमाहा छिचरो जुवाया असंतोकि सस्तोचाकर राजाले छाडनु
७४ ॥ न्यजेत्तुमित्रमनुग्रहं सन्तुग्रहपणं न्यजेत् कृपणा दविसेये न तस्माच्चक
 तनाह्वानं **॥ ७५ ॥** अतिउग्रराजाकन छोरु कृपविराजाकन पनिछोरु योकाज
 निको भनि भन्याराजाकन पनिछोरु ससुमानिसुले सति गन्यो भनिनजा
 न्याराजाकन पनिछोरु नछाया नाशहोला **॥ ७५ ॥** धामा भार्या सुतो सुखि पे
 यको वाग्विचारक निस्नेहो वधुव गंधि न्यजेदस्य महत्सुखं **॥ ७६ ॥** प्रीतिनभया

॥साक॥

॥१४॥

कात्थीः सुखछोरो अहोकोनगन्थासेवक यनिथोक छोदि दिया पछि सुख।
कुछ॥१६॥ नकश्चित्कस्यचिन्मित्रः नकश्चित्कस्यचिन्मित्रः कारणा देवजायते
मित्राणिपिपवन्मथा॥१७॥ कसेकोकोहीमत्र छेन कसेको कोहीपयाग छे
न कायकारणामासनुपरि कुछ मित्रपनी ईछ॥१८॥ कार्यर्थी भजते लोक
न लोक परमार्थक वनक्षीर संयदृष्टा परित्यजतिमातर॥१९॥ आफ्राकाज
कानिमित्त सर्वे प्रेममंडलं धर्मकानिमित्तकोही प्रेम छेन न कसो भया ॥२०॥
थाक्या पछि गाईकन वाछाले छादे छन॥२१॥ कुतोय सनिनो निन्दु अ ॥सम॥
नृपस्य कुतो रतिः कुत सोय्यं दीरुस्यः दुर्जनस्य कुत क्षमा॥२२॥ जुवाया ॥१५॥

छिनायाकन निन्दा लायेन सतोयन भयापीछु रतिकाही होला दुर्जनका
फेलाप न्यापीछु क्षमाकाही होला॥२३॥ तत्करम्य कुतो मान्यः दुर्जनस्य कु
तक्षमाः वेश्यास्त्रोणां कुत स्नेहः कुत सत्यं च का मिना॥२४॥ चोरको काहामा
न होला हुयेन दुर्जनसे उ क्षमा हुयेन वेश्या छे उ स्नेह हुयेन न छिना
या छे उ सत्य हुयेन न॥२५॥ दुवलस्य वला राजा ववाला कदिन वल वल
सुखस्य मोनत्व चोरणां मनुज वल॥२६॥ निवेलिको वल राजा हो वालसका
वल रुनु सुखको वल वली रहनु चोरको वल लवारि कर गन्या हो॥२७॥

चा०क
॥१५॥

अनाथनादोरडाशां बालवृद्ध तपोस्तिको अन्यायपारिभूतानां सर्वथा पार्थिवो ग
ति॥१॥ २॥ अनाथकोदोरडको बालवृद्धको अन्यायले मायाको एति
को बलराजा हो अरुगतिको हिछैन॥३॥ व्याधितस्यार्थ होनस्य शत्रुभि
र्यामितस्य च हृदये शोकदग्धस्य मुहुर्दृशनमोयध॥४॥ शोभीकन ध
नमभयाकाकन शत्रुलेहु रविदियाकाकेशा हृदयमाशोकलेदग्ध भया
कन ओयधी इष्टमित्रको मुखहेनु॥५॥ आतुरव्यसन प्राप्ते दुर्भिक्षे श
त्रुविग्रहे राजद्वार इमशानेवा यस्मिन्मृति सवाधव॥६॥ शोभिभैरव्या मा

॥१५॥
॥१५॥

दुःखभैरव्या मा खानुन पाउटा मा शत्रुसंग विरोधे पश्या मा यतिमा
आक्रामाथमारहन्त्याकन भाइभन्नु॥७॥ भावमुद्धिर्मनस्यासां शा
तव्यं सर्वकर्मसु भावेन च स्वीताकान्ता भावेन दुहितानना॥८॥
मनुष्य हरुके हो काम गदा मापनि भावनाले प्रभु भुञ्ज्य भविजानु
कसोभया श्रियोको मुखको च सुचनाक्या भावले गरिष्ठ छोरिको
मुखच सुचनाक्या भावले गरिष्ठ॥९॥ नदेवा विघ्नेकाष्टे पाया
शो नचमृचये भावेसु विघ्नेदेव स्तस्माद्भाव महतरं॥१०॥

॥चा॥

॥१६॥

काठमापनिहुंगासापनि सानोसापनी देवताछेनन् भावनामादेवताछ
न तस्कारणा भावनाचाहिछ ॥ १६ ॥ शिष्याणां देवताचार्ये ज्ञानमा
चार्यदेवतादेवतायोयिता भता वासुगो जनदेवता ॥ १७ ॥ शिष्यको
देवतागुरु गुरुकोदेवताज्ञान स्त्रीकोदेवता स्वामि सर्वलोकदेवता
वासुगोहो ॥ १८ ॥ विप्रपश्ययथावन्ही साचार्य यस्यदेवता पृथीपश्ययथा
माता मित्र पश्ययथा सुत ॥ १९ ॥ वासुगाकन अग्रिहे मातु गुरुकनदे
वहे मातु आमाकन पृथीहे मातु छोराकन मित्रहे मातु ॥ २० ॥ गुरु
प्रिदिजातिनां वर्णा नां वसुगो गुरु पतिरेको गुरु स्त्रीगो ह

॥चा॥

नोगुरु ॥ २१ ॥ वासुगाको गुरु अग्रिहो चारे जातको गुरु वासुगोहो स्त्रीको गुरु
स्वामिहो सर्वको गुरु अभ्यागतहो ॥ २२ ॥ उ नमस्यापि वर्णास्य नीचोपि गृह
भागत ॥ पूजनीयो यथान्याय सर्वस्याभ्यागतो गुरु ॥ २३ ॥ उ नमजानि भयाकाघा
मापनी शोचनानि अभ्यागत आयापछि पूजागनु पछि क्याहो भन्या सर्वको
गुरु अभ्यागतहो ॥ २४ ॥ देवता पूजय दत्ताः भृत्या नृदानेन न पूजयेत् ॥ शुद्ध
जोपकारेणा विप्राणा मा भवद्वन ॥ २५ ॥ देवता पूजागनु भावनेः सेवक रिश
वन् धनदान गौरि शुद्धि छावन् ॥ उपकार गौरि वासुगाको पूजा गर्नु नम

॥ वा क ॥ स्कारगारि ॥ २१ ॥ धर्मस्य मूलं राज्ञानः तपो मूलं च ब्राह्मणाः ॥ ब्राह्मणा यत्र पूज्यन्ते
 तत्र धर्मसनातने ॥ २२ ॥ राजाको मूलं धर्मो हो ॥ ब्राह्मणाको राज्ञः तपस्या हो ॥ ब्राह्म
 णा आदरगारि ॥ जाहा पूजागछ ॥ उहा धर्म रहछ ॥ २२ ॥ आचारात्फलते धर्मः सो
 चारात्फलते धनः ॥ आचारात्फलते साधुनिष्ठाचारा हन्त्यलक्षणा ॥ २३ ॥ नेमने
 सागारि कनधन पनि दुछ ॥ नेमने सागारिः सर्व फल पाहि छ ॥ नेमने सागारि अ
 लक्षणा जाछ ॥ २३ ॥ भोज्ये भोजन शक्तिश्च ॥ रति शक्ति वरस्त्रियि ॥ विभवे दान ॥ २४ ॥
 न शक्तिश्च ॥ नाल्पस्य तपस्य फल ॥ २४ ॥ रवानाचिनसं पूरा छ ॥ सानाको साम

॥ राम ॥
 ॥ १७ ॥

र्थ छैन ॥ स्त्रीविमुख रतिको सामर्थ छैन ॥ धन छ ॥ दानगर्नाको सामर्थ छैन ॥
 मतिथुलो तपस्याको फलले दुछ ॥ २४ ॥ बाले चैव चले धर्म मनिन्य रवतु
 जीवित ॥ फलानामपि पक्षानां शाश्वतं पतनं भवेत् ॥ २५ ॥ बाल सदे सि
 धर्मको चचा गरि रहनु ॥ यो संसारमा अनित्य छ ॥ कहा हो भन्या ॥ पाक्याको
 फल ॥ समुदिनमा रवतु लाभानि ॥ थाहा हुये ननु ॥ तसर्थ ॥ मर्नाको पनि
 थाहा हुये न ॥ २५ ॥ सदं म्भश्च होता धर्म ॥ को धर्मैव हतं तप ॥ अहं छैन हत
 ज्ञानं ॥ प्रसादेन हत भूत ॥ २६ ॥ अहंकार गन्या ॥ धर्मना श दुछ ॥ रिमा हा भ

२
॥ वा. क. ॥ यातपस्याको नाश ऊँ छ हठ न भया ज्ञान ऊँ छेन गुमानि भया पीछ प ह्याको
॥ १८ ॥ मास्त्रपनि नाश छ **॥ १९ ॥** अदी प्रः गौ होना हो मो हता युक्ति र साधिका उप
 जिया हता कन्याः स्वार्थ पाः कजीया हता **॥ २० ॥** नवल्याको आगोमा होम
 गन्याको व्यर्थ ऊँ छ साछिन भै यायाको अन्न व्यर्थ ऊँ छ दोहरी सर्च ली
 कन्यादान गन्याको पनि व्यर्थ हो आक्रान्ति मित्र पकायाको अन्न पनि व्य
 र्थ हो **॥ २१ ॥** दारिद्र्य व्याधि दुःखानि बन्धन व्यसनानि च अदानु फलमेता **॥ राम ॥**
 नि तस्मादानं विशिष्यते **॥ २२ ॥** पूर्व जन्म सादान गन्या को फल ले दारि **॥ १९ ॥**

दुऊँ छ बन्धन पाउछ दुःख विपति ऊँ छ तस्कार गा दान धर्म गर्नु **॥ २३ ॥**
 पुलकाइ बधनेयु पुत्रिकाइ वज्रतुयु तादृशास्त्रे मनुष्येयु ये च धर्म वही
 कृता **॥ २४ ॥** धर्ममा रति न भयाको मनुष्य कस्तो हो भन्या धान का घा
 टा जस्तो जत्रु माको पुत्र लि जस्तो भन्नु **॥ २५ ॥** यज्ञ दुर्जन समर्ग भज
 साधु समागम कुरु पुण्य महा शत्रु स्मरति त्यमनित्यता **॥ २६ ॥** यो संसा
 र अथि रहो भनि जानि दुर्जन को संग छोडनु साधु जनको संग गर्नु ग
 नदिन धर्म गर्नु **॥ २७ ॥** **॥ इति श्री चानक्य सार संग्रहे प्रथम शतक**

॥ चा.क. ॥

॥ १९२ ॥

समाप्त ॥ ॐ श्रीगुरुगणेशाय नमः ॥ शास्त्रार्थचक्षुषो विद्वान् नरे
ह्येति चक्षुषा विद्वत्तार्थचक्षुषा विप्र इतराचारचक्षुषा ॥ १०१ ॥ ज्ञानि
को आसा शास्त्रहो राजाको आसा न्यायनिनिहो ब्राह्मणको आसा वेद
हो अरु ज्ञानि मनुष्यको आसा चार चिवाहो ॥ १०२ ॥ राजा धर्मशिधमेश पा
पेषापसमागम राजा हि दुर्निहो त्रिस्था यथा राजा तथा पुजा ॥ १०३ ॥ राजा ध
र्मात्मा भया पुजा पत्रिधर्मात्मा हुंछ राजा पापि भया पुजा पनि पापि हुंछ न
सर्था राजा भलो हुनु चाहिंछ ॥ १०४ ॥ उद्यमसाहसधैर्य बलबुद्धिपरा

॥ राम ॥

॥ १९२ ॥

कम सहेने यस्य तिष्ठति तस्य देवोपि शक्तिः ॥ १०५ ॥ उद्यमसाहसधैर्यबलबुद्धिप
राक्रम एतिगुण भयाको मनुष्यदेसि देवता पनि दुश दुष्ट ॥ १०६ ॥ साक्षात्
नेन भेदेन कमणाचबलेन च सर्वतस्तु महा शत्रु घातनीयोनराधीपे ॥ १०७ ॥ सा
मदान भेदले कमलेवलगी हेमन्त लाई कन पनी राजाले वडा शत्रुको नाश
गर्नु ॥ १०८ ॥ पात्रेत्यागिगुण गुण भोगेपरे जने मह शास्त्रेवाधो गुण याथा नृप
ते पंचलक्षणा ॥ १०९ ॥ पात्रे हरि त्याग गम्य गुण देसिगु सिह न्या आक्रा परि
वार वा तुला गरि खान्या शास्त्र जान्या रणमाशुग एति राजाका पांचलक्ष

॥ चा. का ॥ शा ऊन ॥ १०५ ॥ उ-नम प्रीति पोतेन शरी भेदे न योजयन्तु ॥ शुद्ध मर्थ उदात्तेनः सम
 ॥ २० ॥ नृत्य पराक्रमे ॥ १०६ ॥ वडा मनुष्य लाई नमस्कार गौर हात लिनु भेद गरि अग
 कन हात लिनु धनदिकन लोभिकन हात लिनु पराक्रमे भया का कन पराक्रमे ले
 हात लिनु ॥ १०७ ॥ नात्मि छिः पोट्या छिः छिः छिः छिः परस्य च गृहे कुर्म श्वा गानो
 पर भावे चरक्षयन् ॥ १०८ ॥ आका उख अर्का कन कहन् अर्का को दुःख आका
 ले छुटा शिरे न अर्का को दो भयापनी कछु बाले आका अंग लुकाया हे दोष ॥ राम ॥
 कुग गुप्तरग ॥ १०९ ॥ मनसा वितयेत्कार्ये वचसान प्रकाशयेत् सच लक्षणा गू ॥ ११० ॥

टात्मा कोयमि छिः अजायेत ॥ १११ ॥ केहेकाज भयापनी मनले चिन्ता उनु सुखले
 प्रकाश नगनु मंत्रे हे गुप्तरगिरा यनु कार्यामि छिः छिः ॥ ११२ ॥ उपकार गृहे तेन
 शत्रु ना शत्रु सुद्धरे न पाद जग्न कर स्थेन कंश केनेव कशक ॥ ११३ ॥ उप
 कार भन्या को शत्रु ले गन्यापनि दुःख कसो भन्या का हो विन्या को कोहे ले नि
 किं छ ॥ ११४ ॥ विदेही मंत्रे रुक्थेन यावत्काले विपर्ययेत् तथैव मागत काले मि
 आ घट मिवा इति ॥ ११५ ॥ आप्रका विपति मा शत्रु कन पनि काठ मा चहाउ
 उपछ आहु काज प्रका पीछ कुंगामा घेता फेकाया हे फेनु ॥ ११६ ॥

॥ वा. क. ॥

॥ १२१ ॥

होजेहकटुकस्मेहे मधुरं किंच भावस्य मधुरवद क. थारिण. लोकोयं मधुरा प्रि
य ॥ १११ ॥ हेजि हा तितोपिरोक्या न निको मांदछरु मधुरक्या नखादेन सुनापिको नबोलमिगे
करोबोलहेकपाराजीजोक ॥ १११ ॥ जिहृगु वगने लक्ष्मी जो हाये । मित्रवा-धवा. जि
हाये व-धनचापि. जिहाये मरणाकु व ॥ ११२ ॥ लक्ष्मी पति जि भ्राकाटु प्या मा
वरयाका छरु छरु मित्रपति जिभे माछरु मरणावधन पति जिभे माछरु ॥ ११२ ॥
प्रियवाक्य प्रदानेन सर्वतुल्यं निजत्रयं तस्मात् देवशातयं किंवकिंच द दिता ॥ ११३ ॥
प्रीयवाक्यो ल्यापिछ सर्वे प्राणी मंनुष्यं कुं नमर्थ ते होजानि वचनकोटी ॥ ११३ ॥

॥ शम ॥

॥ २१ ॥

नहुनु ॥ ११३ ॥ आग्नेदो गरद श्रेव शस्त्रपाशो दृनापहा क्षेत्रदा एपहारे च चडेते
ह्यातनायित ॥ ११४ ॥ आगो मल्का उ न्या विष सुवा उ न्या अर्काको प्राणालि न्या अर्को
ह न्या हृत्तिह न्या धनह न्या एति छथोक आतनायि वोला उ छ ॥ ११४ ॥ आतनाई न
मायात्र मीपेवदान पारंग जिघासंत जिघासी यात्रनेन वृक्ष हा भवेन ॥ ११५ ॥ एज्जा
आतनायि कनता वेदान्न जान्या । वाह्मणा भयापनि शोफु माह सायाजे दोय
लागेते न ॥ ११५ ॥ राखपालयेते नित्य सत्यधर्म परायणा ॥ निजिन्य परमै न्यानि प
निधर्म रापालयेता ॥ ११६ ॥ राजाले सदा ससधर्म गेटे राज्य पालना मर्न शुभनि
मार्नु आठन्या लाई

॥चा०क॥

२२

निकर धर्मने प्रजाको पालना गर्नु हो ॥११६॥ पुष्पं पुष्पं विचिन्वन्ति मूल
छेदं साकारयेत् साक्षात्काल इवागानि यथायानाति सासी ॥११७॥ राजानं माति
नित्तो ज्ञानं कसोभन्या चाहेदो ज्ञानी पुनर वात न उखलनु तस्मै राजा
लेपनि प्रजाराधित राड गर्नु ॥११८॥ ओर मित्र मुदा शिवा मध्यमस्थ विरं गुरुः
यानवृद्धिं तिमदात्मा सच सर्वत्र न श्याति ॥११९॥ यो शत्रुयो मित्रो यो उदासीनो यो
मध्यमो यो ज्येष्ठो यो गुरुर्भानो ब्रह्महार गर्नु शत्रुमित्रको विचार नगना मोस
छ ॥१२०॥ अनाययय कनोच अनाथ कलह प्रिय आनुरं सर्व भक्षी च न

एमा ॥

२२ ॥

रशीं विनश्यति ॥१२१॥ आय नहीरे खच गन्या राजान भयाको देहमा छ
गरागन्या रोगि दुःखा सर्वेथोक खाना चाहेनाम छ ॥१२२॥ कः कालः कानि
मित्राणि को देश काव्या गम कस्याहं काचमेशक्ति गिति चिन्ता मुहुर्मुहुः
१२० ॥ कालभन्याको काहो मित्रमन्याको कोहो देशभन्याका काहो खच दुःखा
काहो लाभकाहो संकोडं मेरो भाथकाहो भानि वारं वार चिन्ता गर्नु ॥१२१॥
मिहोदकं वकादेकं शिष्यं चत्वारि कुक्कुरा ॥ वायसान् पञ्च शिष्या च वटु शु
नरान् शोणान् भान् ॥१२२॥ मित्रको एक गुणालिनु वकुलाको एक गुणालि

॥ चाम्पा ॥ न करुणको चारुगालिनु कागको पांचगुगालिनु कुकुरको छ गुनलि
॥ २२ ॥ न गदाहाका तीनगुगालिनु ॥ २१ ॥ प्रभूतकार्यमल्पं वा योनर कर्तुं मिच्छति सर्वा
 रम्भे सुतत्कार्यं सिंहोदकं विधीयते ॥ १२२ ॥ किरिकटिगन्गा पनि सिद्धन गरि न
 छोडनु यो एक १ गुण सिंह छे उलिनु ॥ १२२ ॥ इन्द्रियाणि नुसंयम्य वक्वत्त
 गिडितोनर कार्यकालो पपत्रानि सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ १२३ ॥ वकुलादे
 आकुरकार्यं सिद्धन कं ज्ञानं शाभै रहन् काजको ओसर पम्पापछि सर्वे **॥ राम ॥**
 काजको साधनागर्नु यो वकुलाको गुणा १ लिनु ॥ १२३ ॥ प्राण स्थानं च युद्धं **॥ २३ ॥**

च सोविभागच वधुषु स्त्रियमाक्रम्य भुजोत्त शिश्ने च त्कारिकु कुर्यात् ॥ २४ ॥
 प्रातःकाले उठ्ठु शत्रुभित्त युद्धगर्नु आफ्ना दान् भ्राई वशेवर देखनु
 ह्नीकेटोकेटि वानुलागारिखानु यो ४ गुणा करुणको लिनु ॥ २४ ॥ गुरुमे
 धुन धृष्टन्वः काले चालय संग्रह ॥ अप्रमादो मुखं नृश्व पञ्चशिखे च वा
 यसात् ॥ १२५ ॥ मेधुन गुप्त्रगर्नु वलाहेरि संग्रहागर्नु दान् भ्राई संग्रह
 नु अहकारनगर्नु धृत्तं जनु एति ५ गुणा कागको लिनु ॥ १२५ ॥ वहा
 सिन्धाल्यमनुष्टु सुनिन्दु शीघ्रचेतन स्वामिभक्तश्च शुरश्च यडनेथा

॥चा०का॥

॥२४॥

मितो गुणा ॥१२८॥ भयोठै रैरवान्या नभयामा सन्नायमान्या चोडे सुतन्या
चोडे उठन्या स्वामिभक्त दुन्या शुभे दुन्या सति द्द गुणा ककुरकोति
नु ॥१२९॥ अविश्वात वहे शरं शीतो ह्यं च न विद्यति तु संतुष्टे भवेत् नित्यं
त्राणि शिथे च गदभात ॥१३०॥ न विमाइ भारिके कन्या तातो चिमा नमा
न्या थोर भयापनि सन्नायमा न्या याति नु गुणा गडा हाकोलि नु ॥१३१॥
विंशत्येता गुणा प्रोक्ता यस्तु कुर्या द्विचक्षणा संज्ञेयति रिपून् सर्वा
न ज्ञेयश्च भविष्यति ॥१३२॥ सति २० गुणा जन्मनुस्यले लिया कोछन

॥गम॥

॥२४॥

यो विचक्षणा मनुस्यले शत्रुकानां श गच्छ नृजा हांगयो ता हाजितिकन आउ
॥१३३॥ अमरीयो मनुस्यलां मन्मसंत प्रचेतसां परस्यरो पकोरगाः पु
सा भवति विग्रह ॥२२॥ शानि मनुस्यले आफ्रामनका दुख ओफ्रे मनमा
माछे नु परस्यर उपकार गौर साधु हाग रागै दन नु ॥१३४॥ एकोदरा पृथक्
गोवा यचरति महागावे असाधिता विनश्यति भैरु गडा इव पक्षी शा ॥१३५॥
दुइ कपाल एकपे त भयाको भैरु पछि मसुदु मा बर्छे आहु शुभ
मोग सागिसस्यो तसर्थ आफ्रामित हाग राग नु ॥१३६॥ व्यसने सति कुर्वित

हु २

जाया

॥चा॥

॥२५॥

येनेकेनासंगतिः कश्चवानर गापुष्टे पुशदा शीथे यथा॥१३१॥ विपात्र पाष्ट
मानाजाति छेउ भन नागारे पात्रेनानुपष्टे श्रीरामचन्द्रकन गाडोपदा वानर भा
लु साथलिकन लैकासाध्याथा॥१३१॥ दुसर सागर तीरा समयवानर वल अ
भूत पूर्वशमेगा सेतुव छे श्रीसागर॥१३२॥ छेरेभयापष्टि मानाजे पात्र दुलोका
जे गछेन वानरसर्वे वतोति श्रीरामचन्द्रले सेतुवा ध्याथा॥१३२॥ यय शन
वयपंच विरोधच परस्पर परेराकन्य मानेनु वयपंचो नर शन॥१३३॥ युधि
स्थिर राजाले दुयोधनछेउ भनछेन हेदुयोधनतिमिहर् शय १०० भा

॥राम॥

॥२५॥

इहो हामिहर् पांच भाई विरोधगारि रह्याछो॥ अकामिनयुद्ध परि गयाप
ष्टि हामिशयर पांचभाई छो॥१३४॥ छित्वाच परममार्गिः कृत्याये रमसा मक
आतय समतायाते यपर परवच॥१३४॥ आफरादा नू भाई संग रुगगागस्त
पनि निदान आकु ओक्रे ऊछ विरानुविशने डून्छ॥१३४॥ चित्राज्वर मनु
यागा मभाना मिथुनज्वर असोभोग्य ज्वर रतीगा वराना मानपोज्या
१३५॥ सुनुयको ज्वर चित्राहो घोडाको ज्वर मेथुनहो रतीको ज्वर अ
सोभोग्यहो वरको ज्वर घामहो॥१३५॥ अधजरा मनुयगा मन चावा

॥ वाक ॥ जिताजराः अमेथुन जरा ह्यी रा मश्वानां मेथुन जरा ॥ १३६ ॥ ठेरे वाटो हि
 ॥ २८ ॥ न्यामनुया चाडे बुठो डुछ नहि डाया पछि घोरा चाडे बुठो डुछ संभा
 गन भया स्त्री चाडे बुठि डुछ मेथुन गन्या पछि घोडा चाडे बुठो डुछ
 १३६ ॥ कष्टाद्विनिःपराधिना श्वावासानिराश्रया भूतपूर्वाथ संयुक्त सर्वक
 ष्टाद्विदुता ॥ १३७ ॥ अर्काका अधिन भैरहन पन्या पछि कष्ट हो आश्र
 यनहुन्या मनुयकनपनि कष्ट हो अधिमाहाधनी पछि कंगाल भया
 लोपनिवहाकष्ट हो ॥ १३७ ॥ अर्थतो व्याधितो मूर्ख प्रवासी पर स्थवक

॥ शम ॥
 ॥ २८ ॥

जीवितोपि मृतपच पचेते दुःख भागिन ॥ १३८ ॥ सदा धन तुल्या उनाको सुत्रा
 गन्या सदा रोगी मूर्ख सदा परदे मि अर्काको चाकर एति पाच जिउनापि
 मन्याको हुन् अभागि हुन् ॥ १३८ ॥ योयत्र नित्य मायाति भुक्ते चापि दिनेदि
 ने सतत्र लघुमायाति यदि शक्र समान ॥ १३९ ॥ अर्काघर सदा जन्मा सदा
 यानुगत्या पछि इन्द्रजातिको भयापनी हुलका डुछ ॥ १३९ ॥ यरान्न परव
 स्त्रं च परपानं परस्त्रीय परस्य च गृहेवास शक्रस्यापि श्रियं हरत् ॥ १४० ॥
 अर्काको अन्नधान्या अर्काको वस्त्रलाउन्या परस्त्री गमन गन्या ॥ अ

॥ चावक ॥ काको घर सदा जान्या इच्छु भयापनि अमान दु छ ॥ १४० ॥ अशोच्यो निरुद्धो
॥ २ ॥ विहा नशोच्य पुत्रवान्तर अशोच्या विधवाता ॥ पुत्रपोत्र प्रिति रितता ॥ १४१ ॥
 ज्ञानिभया कंगाल भया पनि शोक छेन छोरा भया का मनुष्यको पनि शोक
 छेन छोरा नाति भया का विधवा स्त्री का पनि मोक छेन ॥ १४१ ॥ विभवा सर्वे पूज्य
 ति नशो रिगरी टिहि न चारा डालो पितरः श्रेया यथा स्ति विपुल धन ॥ १४२ ॥
 सर्वे लोक ले धनको मान गछन् मनुष्यको कोहि मान गछेन न मुहाजन ॥ राम ॥
 धनि भया ना चारा डाल कन पनि मान गछन् ॥ १४२ ॥ धन साहु पर धर्मो ध ॥ २ ॥

त्रे सर्वे प्रीति छित जीवति धनि नो लोकेः सृतायेत्त धनानर ॥ १४३ ॥ श्रेष्ठ धर्म भ
 च धन हो धर्म जो छ धने ले प्रीति छा दु छ तसर्थ धनी मनुष्य जिउयो हो
 निर्धनि मनुष्य मर्याको हो ॥ १४३ ॥ अति संपद मापचे भेतव्य यत्ना इयं
 अत्युच्चो गिरवरा रुद्धः सत्यं वज्रं शायाति न ॥ १४४ ॥ अति धन भयापछि स्व
 रूपा भनि दुःख वनः कुसो भन्या अगालो परवत कनः वज्र ले यमा उरु छन्
 १४४ ॥ कामक्षो भक्षको नित्यः कुसुमा निचरो गिराः यस्य भार्या त्वरं तु
 सा कचतस्या त्वं गृहे ॥ १४५ ॥ सर्व भक्षिकरा अभक्षका हा छ सदा र

॥चा०क॥

॥२८॥

गिकन सुखका हहोला जन्कोर्यो अमन्त्रोपिछ उरुनका हसुख
होला ॥१४५॥ सुभिक्षकस्य तो नित्य सुखनित्य मंगोगिशाः भाया भन्नेवशा
यस्य नम्यनित्यो सर्वं गृहे ॥१४६॥ सुभिक्षका समयमा येतिगन्याको सु
खदुःख अंगी सदा सुखि दुःखन् स्त्रीवश्य दुःखाका घरमा सदा सुख
दुःख ॥१४७॥ सर्वपावश दुःखः सर्वमात्मवश सुखः स्तिदिद्यात्ममासेन लक्षणा
सुख दुःखयो ॥१४८॥ अर्काको वशमा पटु सर्व दुःखहो आफ्नाव समा रहनु स
र्व सुखहो सुख दुःखको लक्षणा स्तिहो ॥१४९॥ सुखरथा चर दुःख दुःखस्थान

॥एम॥

॥२९॥

नर सुख सुख दुःख सुख सुख्याणाः चक्रवत्यरिवर्त्तते ॥१४९॥ सुखका अन्न
रमा दुःख दुःख दुःखका अन्नरमा सुख दुःख मनुष्यकन सुख दुःख चक्र
हो फोछे ॥१५०॥ वज्रमि सुख संघाते रथान्यै पशु ह निभि छाटयति गुणा
त्तावान् मधैरि विविदिवाकर ॥१५१॥ सुख सर्वे वाटुला भयाका ठाउ मा श्रीम
यकन वादलले छाप्योफे छापछन् ॥१५२॥ अमता सहसंगेन कोनयात्रि
धमांगति पयो यिसो गिदनी हरने मद्यमित्य मिधीयते ॥१५३॥ कुजातगित
संग भयापिछ भला मानिम् पनिकुजाते बालाउ छ कसो भया मुलिनो

॥चाक॥

॥२२॥

ले डुट बोको ल्यायापनि रगमिहोभाने भन्छ ॥१५०॥ असत्सपकटोयेगा ॥
अधमायात्रि साधवः मार्गस्तिमिरटोयेन समोपि विममायेन ॥१५१॥ असा
धुमिन संगगन्यापछि साधुपाने असाधु हुन्छ कसो भन्या अंधारले छोया
पछि सम्मवाटा पाने विममदेखिन्छ ॥१५१॥ उन्नेमै सहसंगेन कोनयात्रि
समुन्नति भू कृतगा निधायने गन्थिते कुसुमे सह ॥१५२॥ भलासिन
संगगन्यापछि मटानिपनि भलो हुन्छ कसो भन्या फलसित गांसिया
कोयास पाने शिरमार हुन्छ ॥१५२॥ किंकरि अत्रिसंपर्क स्वभावो दुर्तिक्रम

॥साम॥

॥२२॥

पश्यान्न फलमध्यस्थं कषायोनामुतांगति ॥१५३॥ भलाको संग भयाले
पनिक्या हुन्छ स्वभाव छोटेदेन आमु मित्रको कोइलो टरे हुन्छ ॥१५३॥
शर्करावसवधेन मध्यनिम्बः प्रतिष्ठितं मधुक्षिरं समवृष्टिर्निम्बं कौ मधु
रायेत ॥१५४॥ सखरमा त्रिमोपने डुट महः सदा छुनु तेपनी त्रिमृतिने हु
न्छ ॥१५४॥ पुस्तके सुचयाविद्यापरह सुयेरुन काय काल नमशाप्र नचा
विद्या नत हुने ॥१५५॥ पुस्तक माल्यख्याको विद्या अर्काका हातमा प
न्याको धन काजपन्याकाघरे मा आफ्नो काजमालायेन ॥१५५॥ दुःख

॥चाक॥

॥३०॥

शिचमित्राणि निस्त्रेहानि च बाधवा किं प्रयोजनक त्वयं मथितो निष्फ
लानिच ॥ १५६ ॥ ठाछाको भित्रर स्नेहन भयाका भाइको क्या प्रयोजन
हू काममान लास्याको निष्फल हो ॥ १५६ ॥ अतव्या दु सपुण्यानि दुस्या
निहिवाधवा काताचालेख्य रुपाच यकालले नेपा भिद्यति ॥ १५७ ॥ व
नकाफल ठाछाका भाइ सतिताजमा पाइदै न भित्तामाले ख्याका चित्र
कारजला ॥ १५७ ॥ प्रज्ञावचनहीनश्च कमहि न स्तुयो नर निर्याचेतनात्
स्य भस्मन्या ऊतयो यथा ॥ १५८ ॥ अज्ञानिवचन हीन कमहीन मनुष्य

॥शम॥

॥३१॥

का काजव्यर्थ हो कभी भन्या मरानिमा धिउ होम गन्या जस्तो हो ॥ १५८ ॥
छागुदुका धिवाहुं दस्यन्या कलहस्तथा चत्वारो निष्फला यात्रो प्र
भाते मेघ दुस्वर ॥ १५९ ॥ वोकाको युद्ध क्रयिको श्राद्ध जोइको कल
ह विहानको मेघ इचार ध्वयर्थ होई जान्छु ॥ १५९ ॥ निष्फला हूपणा
स्यवा निष्फला रतिरातुर्दोषसंयुक्त शीलस्य श्रुतेर्वप्रयति
स्फला ॥ १६० ॥ हूपणाको चाकरी शोणिको मेथुन दोष बालराका वि
द्या सतिव्यर्थ होइ जान्छु ॥ १६० ॥ वलयकुलया प्राज्ञ विरूपम

॥चाक सपिकन्यका रूपस्मिन्निननीचस्य वेवाह्यसदृशो कुले ॥ १६१ ॥ जानिले
॥२१॥ पनभयापाने वडोकुलकि कन्या विवाहागनु सुदीभयापाने निचकु
 लकि कन्या विवाहागनु छेन ॥ १६१ ॥ विवाहपुमनं ग्राह्य समेध्या द
 पिका न्न निवाहपुनमाविद्या स्त्रीरत्न दुष्कुलादपो ॥ १६२ ॥ वि
 समापनि अमृत शिकिलिनु अपवित्रमापनि सूनाशिकिलिनु जोग्यकु
 रोवातय कोपाने मानु नो चेह उपनि शुला विगालिनु सानाकुलाका
 पनी स्त्रीरत्ननालिनु ॥ १६२ ॥ करय दोष कुलेनास्ति व्याधिनोको न

॥राम॥
॥२१॥

पीडितं केन तत्र व्यसूनं प्राप्त्वं श्रियं कस्य निरंतरं ॥ १६३ ॥ कस्का कुलमा दोष
 छेन रोगनलाग्याका करुनाइछ दुःखनपायाको करुनाइछ लक्ष्मीस्थिरक
 स्काछ ॥ १६३ ॥ दोषोपि स्त गुणो यस्ति निगुणोऽपि जनुषु सुकु मारय
 पद्यस्य नातभवति कर्कश ॥ १६४ ॥ सर्वेका दोषपनि दुःख गुणपनि दु
 छ वेसक मलका फूलको नातयथा दुःख ॥ १६४ ॥ अमृत शिशिरेव
 हि रमृत क्षीर भोजन अमृत गुणावति भार्या अमृत बालभाषित
 १६५ ॥ जाडाको अमृत आगोहो क्षीरपान अमृत गुणभयाकि स्त्री

॥चा॥

॥१२॥

अमृतहो बालबलेबोल्याको वचनपीते अमृतहो ॥१६५॥ दुर्लभ भाषा हकीति
वाणी दुर्लभ भक्त भसी प्रभु दुर्लभ च सुहृत् नारि दुर्लभ वचन प्रीति ॥
१६६॥ ससक्तबालि क्षमावत राजा हितको स्त्री प्रियवचन सुति दुर्लभ
भहो ॥१६६॥ नदिनां जाह्नवी श्रेष्ठा नारिणां च प्रतिवृता मनुष्याणां नृप पादु
दंशनाय त्रहर्विति ॥१६७॥ नदिमांगगा स्त्रिमा प्रतिवृता मनुष्यामा राजा
दंशमा आकुर्वत्याको श्रेष्ठ उच्यते ॥१६७॥ पुत्रोपे त्रजना कीर्ण दामोदा ॥गृह॥
ससमाकुल भायावैरिणां पुमा यथारण्य तथागृह ॥१६८॥ छेदनाति ॥१२॥

कमाकमांशो यति संयुक्त भयापनी स्त्री न भयाको घा वनजस्तोहो ॥१६९॥ सर्व
क्षमेव रत्नानां स्त्री यो रत्न मनुजसं तस्मान्न दूष्यति तया न्यक्ता धनेन किं
१६९॥ सर्वे रत्नका दुलो स्त्री रत्नहो तदर्थं स्वाक्षी न भयापछि धनले क्वा प्रयोग
जनछ ॥१६९॥ कुस्त्री हति कुटुम्बानि कुपुत्र हन्यते कुल कुमत्री हन्यते राजा
राज्यं चोरे शाहन्यते ॥१७०॥ कुस्त्रीले कुटुम्बको नाशगछ कुपुत्रले कुल
को नाशगछ कुमत्रीले राजानां मिच्छ चोदले राज्यको नाशगछ ॥१७०॥ स्त्री
गाढा घसह श्राणि गुणा स्त्रीणी महियते गृहचार सुतो न्याति मरणो पति

॥ चाक ॥ नासह ॥ १०१ ॥ स्त्रीकादोम हजार छत्त गणा भन्या तो ३ न छत्त क्याक्या भन्या घ
 ३३ रको रक्षागने १ छोरा पाउनु २ सति जातु ३ हो ॥ १०१ ॥ कवप किन्न पयानि कि
 न्न भक्षति वायसा प्रमदा किन्न कुर्वति किन्न जल्यति मद्यपा ॥ १०२ ॥ कवे
 दह हले नदेष्या कोक्या छ कागले नथाया कोक्या छ स्त्री ह हले क्यापो
 गदेन मतवालले क्यापो वोल्लेन ॥ १०२ ॥ पुत्र प्रयोजना भार्या पुत्रापि
 राड प्रयोजना हित प्रयोजन मित्र सर्वमात्म प्रयोजन ॥ १०३ ॥ छोरा कानि रान ॥
 मित्र स्त्री हो आफ्रा पिण्डका निमित्त छोरो हित निमित्त भीत लावन ॥ ३३ ॥

आफ्रा निमित्त सेवे तुल्यावन ॥ १०३ ॥ समुद्रावरणा भूमि प्राका एवरणा गृ
 हा नरेन्द्रावरणा देहा श्रीचावरणा स्त्रीय ॥ १०४ ॥ समुद्रले वेध्याको पृथीवि हो
 परचा जले वेध्याको घरो राजाले वेध्याको देश हो मुचीचले वेध्याको स्त्री
 हो ॥ १०४ ॥ नगृहा गिनि कामाति न प्राकोरा रक्षका न बंधु नैव वन्धोवा सुशीला
 अकुल स्त्रीय ॥ १०५ ॥ घरको धनको पर्यालले रक्षा छेदेन न बंधुले पनि छेदे
 न मिलव न स्त्रीले मात्र रक्षा छ ॥ १०५ ॥ नादि पात यते कुल नारि पात यते
 कुल नारि गांच नदिनांच छ छलति नागानि ॥ १०६ ॥ नदिले आफ्राति

॥ चक्र १ भन्का उछ स्थीले आक्र कुल कुलको नाश गछ नदिकोर स्त्रीको एकै च
 ॥ ३४ ॥ लनछ ॥ १०८ ॥ लनापाभ स्थित दक्ष भुन्यापाभ स्थितानुप पाभस्थ पुरुष योधि
 सु वेष्टयति नशमय ॥ १०९ ॥ लक्ष्मि आक्र नजिकको दक्षममा उछ राजानि
 आक्र नजिकको सबको नीको मानछ स्त्रीहरूले आक्र नजिको पुरुष तुल्या
 उछ यति ३ थोक बोवा छ ॥ ११० ॥ नेवपश्यति जाता भुका मा भो नेवपश्यति
 नपश्यति मद्रो मन्त्रो अर्थिरोय नपश्यति ॥ १११ ॥ जने दोविकानुपनिके हिटे
 सदेन कामातुरले पनि केहिटे सदेन अहंको पनि केहिटे सदेन धनतुल्या ॥

॥ राम ॥
 ॥ ३५ ॥

न्यापिने केहिटे सदेन ॥ ११२ ॥ जो राम न प्रशयत भार्या चातयेवना रणा प्रत्या गत
 थूर मश्यं च गृहमागता ॥ ११३ ॥ अन्नघायाको पद्याको त्रिको वयस गयाको स्त्री
 त्रिको सगामेट विघर फरकाको भूरा त्रिको अन्नघाभिन्नपद्याको त्रिको ॥ ११४ ॥
 लक्ष्मि लक्ष्मि गा हीनेच कुलहीरो मरस्वति अषात्रे मने नारि गिरीवर्ष तिवा
 सव ॥ ११५ ॥ लक्ष्मि गानह्याछे उको लक्ष्मि हीनकुल मावस्याको मरस्वती घटि
 यासंग लयभयाको स्त्री इन्दुले पर्वतमा पान्याज मो व्यर्थ हो ॥ ११६ ॥ यस्य भा
 र्या मुहपाच कस्मिन् कलह प्रिया उन्नोत एवादिच साजरा नजराजरा ११७

॥चावक॥

॥३५॥

जस्को स्त्री नरा मीछ सदा कलह गन्या पोशमित उन्नरा उन्नो गन्या त्या स्त्री को पुरु
स चोडे बुछो डुछ ॥१८१॥ यस्य भार्या मुरुपाव भर्तार मनुगामिनी नित्यं मुधुर भाषित
माश्रियान श्रीयाश्रिया ॥१८२॥ जस्को स्त्री मुन्दो छ पुरुष ले भन्या को माद छ प्रीति
वचन ले वोला उछे न्यस्को पुरुष बुछो भयापनि दिन दिन त ह्यारी डुछ ॥१८३॥ यस्य
भार्या गृहे नित्यं माते वहित कारीणी वहुते तस्य गात्राणि शुक्लपक्षे यदा शशि
१८४॥ जस्को स्त्री आमाले निको गर्दो छे पुरुष कन निको गर्द छे तस्को शरीर शु
क्लपक्षको चन्दु मा छे वरु छ ॥१८५॥ यस्य भार्या गृहे नित्यं शुनीव पीर गर्जति

॥राम॥

॥३५॥

तस्या मंदाने गात्राणि पद्मिनीव होमागमे ॥१८६॥ जस्को स्त्री पुरुष कन कुकुर ला
यो छे गर्द छन तेस्को पुरुष को शरीर गल्ट छ हिउद को कमल मुक दो छे मुक द
छ ॥१८७॥ कि जाते बहु भि पुत्रे शोक मन्नाप का के वरमेक कुलाल वो यत्र वि
श्रे मने कुल ॥१८८॥ शोक सन्नापो दन्या ठरे छोरा भयाले क्या डुछ कुल धारि न्या
एके पुत्र ले श्रेष्ठ डुछ ॥१८९॥ एका भार्या त्रय पुत्रा दहति दश विनव कल्प का
लावमानोप नतया स्याति वि क्रिया ॥१९०॥ स्त्री १ छोरा ३ दुइ हल गाइ १० एते
डुन्या को केले पाने विप्र देन ॥१९१॥ एह व्यावहव पुत्रा गया मे कार्य दिव जेत

॥चाक॥

॥३८॥

येजेतेव्याश्वमेधेनूनीनस्वाविप्रमुत्सृजेन॥१८॥ ठेरेछोगाहोसुभनिइच्छागुरु
ठेरेछोगाभयापाछे एककोहि गयाजाला एककोहि अश्वमेधजश गला एक
कोहि द्योतात्मगजजगला॥१९॥ एकेनशुक्लवृक्षेन दह्यमानेवरिहना दह्यते
तदनसर्वकुपुत्रेणकुलंयाथा॥१९॥ शुक्लाको एकदाक्षमा आगोलाया
सेवेवनदृष्टिछ तस्मैकुपुत्रलेकुलकोनाशगछ॥१९॥ एकेनापिसुहृक्षेणवन
नेनसुगंधिनावासिततदनसर्वसुपुत्रेणकुलंयाथा॥१९॥ वनमाएकदाक्षसुगन्ध
कूलकुल्याले सेवेवनसुगन्धगगच्छ तस्मैसुपुत्रलेकुलकोउछागछ

॥१९॥

॥२०॥

यस्यपुत्रावसाभृत्या भार्याछद्यानुवन्तिनो विभवेष्टोपसंतुसु स्वर्गातस्यमहोत्तले॥२०॥
जस्कोछोगेछोर्णि कमागकमारे वड्यमाछन् आक्रोशोवस्यमाछन् धनपानेछन्
तस्मास्वर्गयाहिभन्तु॥२०॥ यिपुत्राष्टेपितुवश्या सपितायस्तुयोयकः तन्मित्रंय
त्रविस्वामं साभार्यायत्रनिर्वति॥२०॥ वावुकवस्यमारह्यजाछ सेछोरोहोपा
लन्यापोमन्याकन वावुभन्तु जमेछउ विश्वासहछ त्यामीउहो आक्रवस्यमा
जाछ मोस्वाद्योहो॥२०॥ यस्यजीवति जीवति विप्रामित्राश्ववाधवा सफलं
जीविततम्य आत्मार्थकोनजीवति॥२०॥ जस्काभीउदावास्यामित्रवाधव

॥चाक॥ जिउछरु सफलजिउनुत्यस्कोहो आपुरिजिउताको फालेदेन १८२ सजोवीत
॥३॥ गुणायस्य यस्यधर्म सजोवीत गुणधर्म विहीनस्य निष्फल तस्यजीवति
 १८३ गुणधर्महुन्या मनुष्य जिउदो भन्नु गुणधर्महुन्या मनुष्यम
 न्याकोहो ॥१८४॥ वाचासास्वतियस्य भार्यारूप धति सति लक्ष्मीत्या मवती
 यस्य सफल तस्यजीवित ॥१८४॥ जस्का मुखमा सास्वति छ घामा गुदो
 स्त्री छ लक्ष्मी पनि छ त्यागि भयाको तस्को जियाको साफल्य छ ॥१८५॥
 धर्मार्थकाम मोक्षाणां यस्मैकोपि न विद्यते आजगत्तः सोपि नि

॥सम॥
 ॥३॥

हुन्या

र्थ तस्यजीवित ॥१८५॥ धर्म अर्थकाममोक्षा स्तित्वाथोक्त पीनननुन्या उन्या मनु
 ष्य जियाको निष्फल हो ॥१८५॥ धर्मसत्यविहीनस्य दिनयातिविवेकायाः सलोह
 कारवस्त्रैव स्वयंचैव प्रजीर्यते ॥१८६॥ धर्मसत्यनिष्ठस्य मनुष्यको आयुष्य
 र्थ हो कामिका लुगा फाल्याहे नासिजान्छ ॥१८६॥ शत्रोपि गुणावाच्या दो
 षोवाच्या गुणपि युक्तायुक्त वचो ग्राह्य नवाच्य गुरुगौरवी ॥१८७॥ गुणको
 कुगता शत्रुकोपि न गर्न दोष कुण माता गुरुको पनि सम मान्नु ॥१८७॥ अ
 कर्त्तव्य न कर्त्तव्य प्रीति कष्ट गते रोष कर्त्तव्य मेव कर्त्तव्य प्रीति कष्ट ग

चाक
३५

ते शेष ॥ १९ ॥ नाग्या काम गलासम प्राणा जान लाग्या पनी नागनु गर्न काम प्राणा
तमया पानि गर्नु ॥ १९ ॥ दुर्जनै सह संगे न मुजे नोपि विन श्याति प्रमन्न जलामि
न्या दुः कर्द मे कलु विहृत ॥ १९ ॥ दुर्जन जगत्या पाछि मज्जन पानि नागसु
कमो भन्या निर्मल जल हिला काम गल हिले दुष्ट ॥ १९ ॥ छवि जयाते दुःमि
क्ष गोभि रभ्या गतो जित जाता धन जिता नारी वस्त्र शास्त्र जिता सभा ॥ २० ॥ धेति
गर्न्याति दुभीक्ष नाशु छ गाइले अभ्यागत कन जिन्नु धन दु न्याले ह्यो वश्य
गछ वस्त्र ले शास्त्र ले सभा जितु छ ॥ २० ॥ इति श्री चानके मार संग्रहे क्षिति श

राम
३५

तक समाप्त २ काले च रिपुणा संधि काले च मित्र संग्रह कार्य काणा माश्रित्य
कालाक्षि पति पण्डित ॥ २० ॥ विलाहेरी शत्रु शीत पत्रि मल्लु पछ विलाहेरी मित्र मि
त पानि विरोध गर्नु पछ कार्य को हेतु हेरी वृद्धि शानि मन श्यले प्रमय काट ॥ २० ॥
कालः पत्तति भूतानि कालः सहते प्रजा कालः सुप्रेषु जागति काले हि दुर्जन क्रम
२० ॥ काले प्राणा पका उछनु काले प्रजा हरा गछ गुत्या पानि काल जागि हे
छ तमध काल जाछ सो वडा छ ॥ २० ॥ कालात्यु महेत वोज फल कालात्यु गहेत
कालात्यु वत्तत सुखि पुन काला हिम हेत ॥ २० ॥ काले ले विया रा पाको उमि

॥चा०क॥ छ कोलेले फलाउछ कोलेले सुष्टिगछ सहापरिकलेले गर्छ ॥२०॥ **॥खंदिशो**
॥३२॥ भूमिगपश्च चद्युकोनलमा हुत सर्वसंहरते कालसमात्कालो महत्ता ॥२०४॥ अका
 शपृथोपानि सूर्य आग्रवाय इमेवे कालेले हर्छन् तसर्थ कालहुलाछ
 २०५॥ किं करी स्थिति वक्राचश्रोतायन्नविद्येत न प्रक्षपराकगमे रजक किं करीष्य
 २०५॥ सुन्या न भया काठाऽमा चोत्न्या कोव्या प्रयो जन छ नागाकोटे श मा धीविको
 क्या प्रयो जन छ ॥२०५॥ कदलो वन मध्यस्थ वहिर्मन्दु पगक म आविवेक जनस्था
 ने गुणावान् किं करी स्थिति ॥२०६॥ किं को वन मा जमे आगे को शक्ति हरा

॥राम॥
॥३३॥

उछ तेने आविवेकि मानि मछे उ गारा मनुष्य को कोह लाग्येन ॥२०६॥ पलेय
 भिन्न मर्यादा भवति किल सागर सागर भेद भिन्न पलेय पिन साधव ॥२०७॥ पल
 य कालमा समुदले पान मर्यादा छाडछन् साधु मज्जन हरु लोकेले पान मर्या
 दा छाडेने तसर्थ साधु मज्जन हुलाहा ॥२०७॥ मेरु श्रृंग के ल्याने मर्यादा सागर
 र्यच प्रतिपन्न महासत्वा न चरति कदाचन ॥२०८॥ कल्यातमा सुमेरु पर्वत पान
 च चलछ समुदले पान आफ्र मर्यादा छडछ महापुरुष लेमावे के रूप
 नि आफ्र मर्यादा छाडेने ॥२०८॥ विद्येत स्त्रीयुचा पल्प विद्येत ब्राह्मणात

॥चा०क॥ प प्राकृत्य विद्युतेनैव दयासाधु सवर्तते ॥२०८॥ स्त्रीछिउ चंचल दुष्ट वा
॥४०॥ ललाछिउ तपस्यहृष्ट नैवेष्टि छिवाहृष्ट साधु छिउ दयाहृष्ट ॥२०९॥ साधु
 सन्मान मात्रेन भवति देहविक्रिया उपकार शतेनापि दुर्जन केन गृहेते ॥२१०॥
 साधुजन छेउ हातजोने मात्र आफु शरीरमा ग्यापनि दिनु छुम् दुर्जन शंग शय
 उपकार ग्यापनि आफु हुयेन ॥२१०॥ बुधेवाध्यानि शास्त्राणि नाबुध शास्त्र
 बोधयत् प्रत्यक्ष पक्षेति दिष्ट चक्षुहिना नपश्याति ॥२११॥ शान्तिकेन शास्त्र
 ले वुझनुहुन्छ सर्वकन हुयेन कसोभया प्रत्यक्ष दिपवाल्यापनि आखा

॥राम॥
॥४०॥

नभयाकोले केही देखेन ॥२११॥ नागे केर फला काग दृश्येते कीप सज्जन आ
 न्यपिद वलाकाग वाहिर वमनामा ॥२१२॥ सज्जन हरु नरिवलजला वाहिर साहो
 भित्रकोमल दुर्जन हरु कलाभया कयजला वाहिर गुप्ता भित्रसाहो ॥२१२॥
 चन्दन शीतल चन्दु श्रद्धेन नतु चन्दुमा चन्दु चन्दनयो मध्ये साधुमं पक शीतल
 २१३॥ श्रीखण्ड चन्दन यनि शीतल चन्दुमापनि आनि शीतल इदुवेचाहि साधु
 सगवधु शीतल छु ॥२१३॥ अधर्माधनमिच्छति प्रीतिमिच्छति मध्यमा उत्तमा
 मानमिच्छति मानाहि महतांधरा ॥२१४॥ अधम मनुष्यले धनको इच्छागछ म

॥ वा ॥

॥ ४१ ॥

धनमनुयते प्रीतिको इच्छागच्छ उन्नममनुयते मानको इच्छागच्छ नवडा
कोधन मानहा ॥ २१४ ॥ मक्षिकावणामिच्छति धनमिच्छति पार्थिव नैवा कलह
मिच्छति शान्तिमिच्छति साधव ॥ २१५ ॥ हिंसा घाटको इच्छागच्छ न राजाल धनको
इच्छागच्छ नैव हर्ष कलहको इच्छागच्छ न साधुको शान्तिको इच्छागच्छ न ॥ २१
५ ॥ इतगश्चाथमिच्छति रूपमिच्छति दारिका ज्ञातय कुलमिच्छति स्वर्गमिच्छ
ति तापसा ॥ २१६ ॥ अहमनुयते धनको इच्छागच्छ न स्त्री हर रूपको इच्छा
गच्छ न ज्ञानि हर कुलको इच्छागच्छ न तपामि हर स्वर्गको इच्छागच्छ न ॥ २१६

॥ राम ॥

॥ ४१ ॥

अतिक्लेश नय दुष्ट मीतलोभे नयतु मुखः परपीडा च याहीते नैव साधु विद्यते २१
अतिदुःख लेगी धन तुल्याउनु अति लोभ गरी मुख गनु अकाक न पोडा दोनु एति
थाक साधु छेउ छेन ॥ २१७ ॥ असक्य नार भेषाज्ञ अकार्य नैव कारयत स्वल्प कार्य न
कुर्याच्च निष्फल नैव समवयत ॥ २१८ ॥ ज्ञानी हर आफुले न सक्यको काम गर्दै
न मानु काम गर्दै न निष्फला काम गर्दै न ॥ २१९ ॥ होले शले न माणिक्य मोक्ति
कन गजे गजे साधवो नहि सर्वत्र च द्येन न वने वने ॥ २२० ॥ सेवे पर्वतमा सीता ऊँचे
न सेवे हीति छेउ गजे माटि ऊँचे न साधु पनि सेवे मानिस ऊँचे न श्रीवण्ड पनी

॥ वक्त॥

॥ ४२॥

मेवेवमा कुच्छेन ॥ २१९ ॥ परकोयं युयुक्तात्मा स्वकार्ये क्षिप्रमाभ्येतु मुहूर्तकोर्येषु नि
र्होति राजकोर्यं सुविक्रम ॥ २२० ॥ अर्काका काममा जुक्तिगर्तु आप्राकाजमा चाडो
माछनु मित्रकोकाजमातनमन गुने राजाका काममा पणक्रमिदुनु ॥ २२१ ॥ अत
लेखवनीचाना यत्कृतं तत्र दृश्यते अचलं चापि साधना शिलालेखवतिष्ठति ॥ २२
१ ॥ नो चलेगयाको काम पात्रिमालेयाजना अथिरेह साकुलेगयाको काम दुंगा
मालेयाको जना ॥ २२१ ॥ महता भाषय सीत महतोमेव संपद इतरेषु मनुष्येषु नाप
देनेव संपद ॥ २२२ ॥ वडाकन आपदापीन पछि रेश्वर्यपनिडुछ छीटा मनुष्यक

॥ नाम ॥

॥ ४२ ॥

न आपदापीन कुच्छेन रेश्वर्यपनिडुच्छेन ॥ २२२ ॥ शम्भुस्तथापि पेत्रा वस्त्रशेष
नचनुमा विष्णुस्मा मात्रा महताकलमपुटे ॥ २२३ ॥ अकपत्रले महोदवसन्तोष
कुछ वस्त्रशयन चनुमासन्तोषकुछ स्मरणागौर विष्णुमन्त्रायकुछ वडाम
नुच्य हानजोर्न मात्र सन्तोषकुछ ॥ २२३ ॥ लेखक पाठकश्चैव यचान्ये शास्त्र
चित्रका सर्वव्यमना मुक्ता क्रियावत्तश्चपाण्डिता ॥ २२४ ॥ लेखन्या पाठगन्या शास्त्र
पह्या व्यासने इमेवस्य कुनु जाइश्वरको भावार्था निपादितकुनु ॥ २२४ ॥
वाशिज्य मश्ववाशिज्य राजसेवा तपोवन धीराश्चत्वारि कुर्वन्ति कातराह्मणि

॥ नाक ॥ वाहका ॥ २२५ ॥ **॥** व्येपार घोरको व्यपार राजाको स्थवा तपस्या इत्यादि पुरुष गछ
॥ ४३ ॥ नृ कान्त पुरुष येति गछ नृ ॥ २२५ ॥ **॥** वजे हनार्थि वागि ज्ये विशार्थि चि वहु श्रुत
 अतु काल मपत्यार्थी मानार्थी नृपति वजेत ॥ २२६ ॥ **॥** धन तुल्या उन्याले वेपा
 शानु विशाक माउ न्याले ठेरै शास्त्र पुहु छोरका इछा हुन्याले अतु काल मा
 सभा गगनु मानका इछा गन्याले राजाको स्थवा गनु ॥ २२६ ॥ **॥** मुख पय दलाकार
 वाचा चरन शीतल हृदय कतु मयुक्त निविध धृतरक्षणा ॥ २२७ ॥ **॥** कमलका
 फुल जस्तो मुख श्रीखण्ड जस्तो वचन हृदय माभन्या कर्तु जस्तो इती नृ ठात

॥ राम ॥
॥ ४३ ॥

काल क्षणा कृत ॥ २२७ ॥ **॥** दुर्जनः प्रियवादि च विश्वासनेव काश्यत् मधुसर्वातीति ह्योगे ह
 दिहाला हला विष ॥ २२८ ॥ **॥** दुर्जन मनुष्य मित विश्वासन गर्तु कमान भन्या जिधा म अ
 सुत पतु मा विष कछ ॥ २२८ ॥ **॥** स्वः सपय मात्राणाः पण्डित न पश्यति आत्मनो
 विश्व मात्राणि पश्यन् न पश्यति ॥ २२९ ॥ **॥** दुर्जन हस्त अस्त्रा कादोय शिष्या प्रमा
 न भयापनिदे स्व नृ आपु दोयता विलपु माणा भयापनि दे स्व दे नृ ॥ २२९ ॥
 दर्शनया श्रेयसूखा धनवन्न शानु गणा दुःस्था पि च दृश्यते विधुका इव पुष्पि
 का ॥ २३० ॥ **॥** यो मुखे लोकछ धनी गमा भयापनी नागुणा के हा कामला छे न जने

॥ वाक ॥ टाकावहत्याका जाहाका फुल फुल्यो ॥ २३५ ॥ मूर्खपिपीर हन्य प्रत्यक्ष
॥ ४४ ॥ द्विपदः पशु भिद्यते वाक्य शैलेन अट्ट ह्य कशठको यथा ॥ २३५ ॥ मूर्खकन छोदि
 दिनु कानभन्या दुइसु हाको पशु हो वचनभन्यावानजस्तो गादामा भिउपाका
 कंठ जस्तो हो ॥ २३५ ॥ सपकरः खर कूर सयानु कूर तर खर
 मंत्रायधि वृक्षसप खर केनो पमान्यात ॥ २३६ ॥ सापपनो सापको हाशमजा
 तमनु व्यपनि सापाको हाशमजात चाहि सापनिको क्याहो भन्या सापता मन्त्रो **॥ राम ॥**
 सधोले वश्य दुष्ट हाशमजातिके होले वश्यगुं देन ॥ २३७ ॥ हस्तिहस्त ॥ ४५ ॥

महस्त्रे गा शतहस्त्रेन वात्रितं शृगो नो दशहस्त्रेन देशान्याग न दुर्जनात् ॥ २३८ ॥ हानिदेखि
 हज्जा हात टा छारहुनु घोडा देखि दशहात टा छारहुनु मिहभयाको देखि दशहात
 टा छारहुनु दुर्जन देखि देशान्याग गर्नु ॥ २३९ ॥ हस्तिना उ कुशहस्त्रेन कशाहस्त्रेन
 वाजिन शृगल गुडहस्त्रेन खड्गहस्त्रेन दुर्जना ॥ २४० ॥ हानिकन अंकुश देखि उ
 नु घोडा कन को दो देखि उनु मिहले गाग कन जो हो देखि उनु दुर्जन क सङ्ग देखि
 उनु पर्छ ॥ २४१ ॥ दुर्जन पीर हन्य शास्त्रनाल कतौ पिसन मीशाना भूयित सप किम मो
 न भयंकर ॥ २४२ ॥ शास्त्रपहुको भयापनो दुर्जनको पाशन गर्नु मीशाभयापनि म

॥ त्र्यम्बक ॥ पकोपासनगर्न दलो ग्ये डू छ ॥ २३५ ॥ पात्रापात्रविशेषेन धेनुपन्न गयो रथा तृणाति
॥ ४५ ॥ स्त्रवेतक्षीर क्षीरान्निस्त्र वेतो वयं ॥ २३६ ॥ पात्र अपात्रको विचार गाइ रैर मपे रै हो
 घामादिकन गाइले दुदादि छ दुदादिकन मपेल विचारि छ ॥ २३७ ॥ एक दुशत्रु मि
 तिहात्वा नापेक्षत कराने काले दुर्जन मायाते तृणास्थ विहो विओ जवतु ॥ २३८ ॥ धनु
 मातुछ भाने अनाद नाने जमा घासमा थोर आगोले पनि धेरै डू छ ॥ २३९ ॥ पशुके
 करके दोसा अक्षीतिम धीपे गले शतकाशे चरवाटे व कुजस्थाने नविद्यते ॥ २४० ॥ **॥ राम ॥**
 टेर आखा छेरु साठि दोस डू छेरु कैलायुग छेरु ओमि दोस डू छ काणाओ रडा **॥ ४५ ॥**

छेरु शय्यदोस छेरु कु ओ छेरु असंख्या दोस छेरु ॥ २४१ ॥ स्थान भुष्टा दुशचारे नि
 हने हागो पारि न्यजेत विश्वास समय काय विनाश सुपा छति ॥ २४२ ॥ स्थान भुष्ट भया
 को निर्घुण कर्पति सित मगहनानु विश्वास गया नाश पछ ॥ २४३ ॥ मृदुने मृदु होत मृदु नाह
 ति दाहना नागाधे मृदु न केचि न समानि क्षा तो मृदु ॥ २४४ ॥ जो कम जो छ सो सो हो को ना
 श गछ कम तोले नशक्यो को कह छिन तसर्थ मोहो भत्रापि न कम तो सो हो हो ॥ २४५ ॥ व
 न प्रज्वलितो वहो दह सुला नि रक्षानि समूल मृदु लयात चायो दो मृदु शितले ॥ २४६ ॥ यत
 मा आगो लाग्यापि न रुख को जोग रह छ पानि लेत जो मृदु उखातिने जाछ तसर्थ कम

॥ जा ॥ लोदीयेदु गउछ ॥ २४१ ॥ स्थूलेशमावलेवर्ध कन्याचवहुभाषणी दुयशीनचक्षेत्राणि
 ॥ २४२ ॥ रतं पौरवर्जयत् ॥ २४२ ॥ दुर्लभयोगो गाम् कुर्यात्तु कन्या किंलायाकोयत सटोकोद
 यिछोडनु ॥ २४२ ॥ रहस्यभेदं पैशुन्यं परदोषानुक्तिन्नं कलहप्रवृत्तेश्चैव दूरतपीरवर्ज
 येत् ॥ २४३ ॥ गुप्तकुर्यात्प्रकृतगर्वा अर्ककाचकुलिगर्वा रिमाहा यमाकन तौठ वषाडनु ॥
 ४३ ॥ अश्वाभुक्तं गजं मत्तः गावश्चैव प्रशीतका अण्वान्न प्रोदाशी दूरात पीरवर्जयत् ॥ २४४ ॥
 घासमाश्वाका घोडा वहुलायाको ह्यति वेश्यास्त्री सत्क्यागिगाई द्वारकोकटि यतिटा ॥ राम ॥
 ठेवाठ छेडनु ॥ २४४ ॥ दुर्जनस्वसदाभिर्षं परस्वामि स्तास्त्रिय गोमिर्गवस्त्रजोर्गव दूरत ॥ २४५ ॥

पीरवर्जयत् ॥ २४५ ॥ दुर्जनोमित्र पूज्युयमिते चेतन्या स्वाधी फरायाकालुगा वुठिगाई
 यतिताधेवातुछोडनु ॥ २४५ ॥ मित्रासदमित्रस्य मित्रास्यापि नोवधयेत् कदाचित् कृपित्ताव सर्व
 गुह्यं प्रकाशयेत् ॥ २४६ ॥ शत्रुशत विश्वासनगर्न मिमित्तायामि विश्वास नगर्न कदाचित् मित्री
 शया प्रकाशता ॥ २४६ ॥ नविश्वासेदोवश्वास विश्वासेनैव विश्वसत विश्वासादयमुत्पन्न मूला
 न्यपि निहृता ॥ २४७ ॥ अविश्वासी विश्वासेच्छु विश्वासनगर्न कसोभन्या विश्वासगयापीछ भय
 उत्पत्तिहुछ ॥ २४७ ॥ नादनाचारीनां ह्यगोराणां शत्रुणां गोमां विश्वासनेव कर्तव्य स्त्रीषु
 राज कुलसुच ॥ २४८ ॥ सदासित नखशित मिगदुन्यामित तरवार समा उच्यमित स्त्री
 धुताभयाका

॥ चाक ॥ सितराजकुलीसितविश्वामनगर्भ ॥ २४८ ॥ नरदत्तोरेसुयद्वक्षायाचनिरनोराश्रया सामन्तर
॥ १४ ॥ हितोराजा नभवात्तचिरायुष ॥ २४९ ॥ नरदत्तोरेकोदक्ष-आधारनभयकिस्त्रिा संवीनभ
 योराजा ठेरेवाचेदेन ॥ २५० ॥ यदोछिच्छाश्रुतिपिती त्रीणीतवनकारयेत श्रुतमर्थ
 प्रयोगेच पराक्षदारदशन ॥ २५० ॥ छेरेस्मप्रीतिहासभयकोतोत् थोक नगने जुवा
 नखलने दामधारा नदिनु रुकात्त अकीस्वाधो नेहने ॥ २५० ॥ नगक्षदुष्टदिस्वाग नकु
 र्या छलावग्रह आत्मनापि तथाकोधं मित्रवैरिनकारयत ॥ २५१ ॥ दुष्टसाग विश्वामनगर्भ छ **॥ राम ॥**
 लले फगगनगर्भ रिमालनकु न मित्ररी विद्याशनगर्भ ॥ २५१ ॥ कुनयंमवीराजानविपेच **॥ ४ ॥**

नो

हसलीपते प्रवाजीनंततभस नेमेवतीमदावुधे ॥ २५२ ॥ अन्धाऽमवीराजा वेण्याकेपोई बाहणा वतभांग
 भयाका संन्याशी योनेकास्यवाशोहंले गदेन ॥ २५२ ॥ कुमेनेनसीविस्वास कुभायायाकुतोपति
 कुगन्ये नासिनिहोने कुदेशेनासिजीवित ॥ २५३ ॥ कुमावेछे उविस्वागदुचेन कुस्त्रोछे उरति
 कुचेन कुगज्यमा निहोने कुचेन कुदेशमावाचनुछेन ॥ २५३ ॥ नासिसत्यामदाचो नोहो
 च हसलीपते मशपेमुहद नासो युतकोरनयनेहो ॥ २५४ ॥ चोछे उमत्यहुचेन वेण्याको
 घोडवालछे उ श्रुचिहुचेन मतवाललेइसीमवरासदेन न जुवायासीग योतिनु छेन २
 थछे दोवरीविप्रमशान दम्पत्या गुह्रीमशया अन्ननेवगतव्य हरस्यद्वयभस्यव ॥ २५५ ॥ दु

वेवाहारा वाहारा अग्रीका गुह्यमिष्यका महादेव वसाहाका माहवाट नजान् ॥२५५॥
 लोकयात्राभयलज्जा दाक्षिण्य त्यागोभयता पञ्चयत्र नवाद्यते नकुर्यात्तत्रानहोवि ॥२५६॥
 लोकयात्राभय लज्जा तपस्या त्याग इषाच पृथाकनभयाकादशमानवधु ॥२५६॥ नोज
 नशुक्लतायात्रे नैवेकल्पं बहुश्रुतं नतागि स्थिरवृद्धि इषान्नमूर्ख ससक्तवदत् ॥२५७॥ गा
 जलसेताहृद्येन शास्त्रजान्योष्ठ कण्ठहृद्येन स्नातोष्ठ स्थिरवृद्धि हृद्येन मूर्खसक्त
 वल्लेन ॥२५८॥ चारुमेघाडोग्रेश्वर आधिशयतथेवत् पुनर्वर्द्धयेतयस्या तस्याच्छेयन ॥२५९॥
 कायेन ॥२६०॥ अनर्कोशये अग्रीकोश य आधिकोशय योतिरु शयरासनेन फोफोर वा ॥२६१॥

आठ्य ॥२६०॥ उद्दिग कलह कगाडू युतमयं परस्त्रीय निन्दोमिथुन मातस्य सवेनेतोहि वर्द्धते २
 २२५२ ॥ आत्रोरहनु कलहार्ते कन्याडनु जुझेयलनु मदयानु परस्त्रीगमन गर्तु निन्दो मिथुन
 आलस्य एतौको जसोजसो सवागम्य तसोतसो वरुछ ॥२५२॥ पादागपर र्वच पीरवाट
 परस्य परिहास्यगुहस्थान यत्नत परिवर्जयेत् ॥२६०॥ परस्त्री परधन अर्कोकोचुको होलु रीत
 शोकगुहको स्थानमा नगनु ॥२६०॥ परोक्षकार्य हंनार प्रत्यक्षप्रियवादि वजयत्रा दशमित्र
 विषकुंभययामुख ॥२६१॥ अर्कोकाकामविगार्या घोरमाधर कगागन्या यस्तीमवशादिदनु साक
 शाभन्या विषकापिला माथिवाट दुदहाल्याजस्तो ॥२६१॥ कुदेशच कुहन्नन कुभायो कुनया
 तथा कुद्वयचकुभोन्यच वजयेत् परिडनेमरा ॥२६२॥ कुदेश कुहन्निकाम कुचरितस्त्रो

॥चाक॥ कुनदि कुडय कुअने योने जानलो छोडनु **॥२६३॥** उवशो यदि रूपा रम्भा यथी तिलोत्त
॥४६॥ मा गोपालो मेरो कोने वरुने पागुरी **॥२६३॥** उवशो रम्भा तिलोत्तमा गोपालो मेनका
अज्ञा नली रामो भयापने परश्री छोडनु **॥२६३॥** येसु कोर्येषु विदेसु ग्रहमा म्विफ
लोदय विपात्रमुमह दया परिवर्जो द्विचक्षुषा **॥२६४॥** जले कोर्यमा भद्रगुणतत्कोले मा फल
मिल्योतपने विपात्रमा वेदोद्योय यो विचक्षु गाले छोडनु **॥२६४॥** भक्ता भक्त शम पश्येत्
कार्यकार्य चतुल्यतां सदा कार्येषु सदैव भक्त्य सर्वदा बुधे **॥२६५॥** यो भक्त्यो अभक्त्यो क **॥२६५॥**
स यो अकाम भवो न ज्ञात्मा सदैव काममा सदैव मां या यता कन ज्ञानिन सदा छोडनु **॥२६५॥ ॥४६॥**

भक्त्यमकुलो नांता राजपराप्राप्तिवेना भक्त्यज्ञात शत्रुणां कृत्वा पूर्वो पकारिणां **॥२६६॥** अकु
लो नरेन्द्रोपनिडगुनु पछे राजोदयि पनिडगुनु पछे ज्ञानिदोय शत्रुदोय पनि डगुनु
पछे अधिशत्रु भयाकासितपनिडगुनु पछे **॥२६६॥** पादपाना भयवाट पश्चात् शिशुगो
भय पवताना भयवज्जु जन्तुनां द्विपडोभय **॥२६७॥** सुखकन वायुका भयछ कमलकन नुसाका
अयछ पवतकन वज्रका भयछ जन्तुकन मनुष्यका भयछ **॥२६७॥** माता यदि विषदृष्टात्
पिता विक्रियते मुनि राजो को गति चान्यार्य को मन्त्राता भविष्यति **॥२६८॥** आमा लो विषयानदि द
बाबुले वचछ भया राजाले अन्याय गदा केसेले रक्षागनु सकरेन **॥२६८॥** यत्र राजा स्वयं चो

॥ च। क। र समीप से रहित न चाहें करी करी स्थिति यतार ध्याने ताभय ॥ २६२ ॥ जाहें गन्ना ओहें चार सेंवा
॥ ५६ ॥ पुगोहिते चार भया को दशमा रस्तो दशमा क्या लाग्य ॥ जाहें वातर शाहु छ ताहें भय ॥ २६३ ॥
 विधाता लिखितायासा ॥ ललाट धर मांलिका दे को पनहि शक्ति मी लख्य लिखित पुन ॥ २६४ ॥
 विधाता लेख्या को ललाट को अक्षर देव लेखी लेखि मेटि सकें देन न ॥ २७० ॥ कर्मो गिरी
 प्रधानादि बुद्धि ना की प्रयोजन बाया गाय कर्ता बुद्धि जे न देवा भाविये ॥ २७१ ॥ कर्म थुलो
 हो बुद्धि ठुलो होईन कान भया दुर्गा को क्या बुद्धि छ तेग छ गालि देवत बनवाई पूजा गछ
 तसर्थ कर्म थुलो हो ॥ २७१ ॥ कर्म भायो पयवा नानि मीति छ हम् शुभे गेह वीश छ दत्त जे प्र ॥ ॥ गम ॥
 पि जान कि दुख भागीनो ॥ २७२ ॥ कर्म मांलेख्या को थुलो हो गुहिव श्रम यपनि ऊँ दे न था ॥ ५६ ॥

हामा वीश छ मीति ले लग्य दिया पीने मिताले दुख पोया ॥ २७२ ॥ पान कुले भवेत सो दोषो य गुण
 सीहीत गुणा पि दोषता या पीव को भूते विधाता ॥ २७३ ॥ अनुकुल वसुंदा दोष पीने गुन हु छ वि
 धाता वक्र हुंदा गुणा पीने दोष हु छ ॥ २७४ ॥ कंकरो तें न राख प्रयमा सा स्व कर्मो भ प्रीति नहि
 मनुया गां बुद्धि कर्म नुगारि गी ॥ २७५ ॥ शीने भया ले पीने क्या ई छ आप्त कर्म ले ल गाई दि
 । या पीछे पेहे दोष मनुय को कर्म अनुसार की बुद्धि चल्य ॥ २७६ ॥ हस्त स भूयन दान
 सत्य करार स भूयगा अत च भूयगां कारों भूयगां की प्रयोजन ॥ २७७ ॥ हात को गहना
 दान हो करार को गहना सत्य हो कान को गहना धर्म कथा सुन अरु गहना क्या प्रयोजन छ

॥चाक॥ ॥३॥ **॥** चारै भूषणा श्रीगंगा दुमागा पृथ्वी भूषण स्वद्योत भूषण पुगा पीतना भूषण
॥५१॥ दृष्टा ॥३॥ **॥** श्रीकागहना चरित्रह रूयको गहना फुल फुल्यो को हो पुस्तको गह
 ना रूयति हो स्वामिको गहना करुणा दृष्टा ॥३॥ **॥** नक्षत्र भूषण चंद्रो नाग
 ना भूषण पीत पृथिवी भूषण राजा शिल मय वभूषण ॥३॥ **॥** नागको गहना चंद्रमा
 हो श्रीको गहना स्वामि पृथिवीको गहना राजा हो सेवेको गहना शीलशोभावे हो ॥२॥
 ७७ **॥** महतापीर भवधर ननिच मानुमुत्तम के शौरि च गाद्यत्य कालो शृङ्खल भू **॥राम॥**
 यणी ॥३॥ **॥** ठुलाले अपमान गन्या पनि नीचले मान गन्या पनि नरोको कसो भ **॥५१॥**

न्या श्रीकृष्णका पाउले कालो मथन गर्दो कालो नागको गहनाको शोभा भयो ॥३॥ **॥** श्रीचंद्रमा
 तंतोयं शुचि नोरि पीतवता शुचि क्षमा करे राजा सत्तोयो ब्राह्मण शुचि ॥३॥ **॥** भूमिमा पया
 को पानी शुचि पीतवता श्रीशुचि सत्तोयि ब्राह्मण शुचि क्षमावेत्त राजा शुचि ॥३॥ **॥** शुचि
 भूमिगत तोयं यत्र लेपो न विद्यते लेपस्थानं परित्यज्य अन्यस्थानं शुचि शुचि ॥३॥ **॥** भूमि
 मागयाको पानी शुचि जाहलो पाको छैन लिपाको थाउँछो डि अरु जगा मा शुचि पानिमे
 याको भूमि शुचि पवित्र छ ॥३॥ **॥** भस्ममा शुद्धते काश्य तापु ममेन शुद्धते रजसा शुद्ध
 ते नारि नोदेव गन शुद्धते ॥३॥ **॥** यगनिले काशा शुद्ध हुन्छ ताको अमिलाले शुद्ध हुन्छ रजस्व
 लोभे श्रीशुचि हुन्छ नदीवेगले शुद्ध हुन्छ ॥३॥ **॥** पितृगंत पुरंदद्या मानुदद्या मेहन सं गो

॥ १५१ ॥ सुहृत्वात्पुत्रमंदयात् स्वयमेव क्रीयते जेतु ॥ २८२ ॥ बाबुले अन्नपूर दिच्छतु आमाले भान्नादि धन
॥ १५२ ॥ गाइले आफु समर्पिछ आफुलेकमाई पढनु ॥ २८३ ॥ कपीलाक्षीरपोनेन बाल्याशा गमेनेन चवे
 दाधेर विचारेगा सधुद्यो नरकं जेतु ॥ २८४ ॥ कइली गाइको इदयाया बाल्याशा सित गमन गथा
 वेदको अक्षर चर्चा गथा थुप्र नरकमा जान्छनु ॥ २८५ ॥ थुदिहने नयोभक्त मासमेक निरंतर
 ज्ञानमाग भवे छुट्टा सुतस्वान श्रमायते ॥ २८६ ॥ बाबुले थुदिकालत बाट रुक्मे न्यायाङ्गनि जि
 उछ जिउछ ज्वाले थुदि मयापाछे कुरुरको यानिमा जन्मन जान्छनु ॥ २८७ ॥ स्तुतिनास्तुताना
 रि घृतहिने नुभोजन वस्त्रहिन मलकार विद्याहिन धनोनाम ॥ २८८ ॥ दुधन दुन्या र्थो धिउत भ ॥ १५३ ॥
 याको भोजन नागाको गहना विद्याभयाको बाल्याशा शोभा हुंदैन ॥ २८९ ॥ शाभेत गलिल पद्यो ॥ १५४ ॥

भने दिसेतो दिज शाभेत तपसंयको वराश्रम शोभते ॥ २९० ॥ जलमा कमल शोभा हुन्छ बाल्याशा
 नेदीसि शोभा हुन्छ ज्ञानितस्याले शोभा हुन्छ भोग्याले शोभा हुन्छ ॥ २९१ ॥ यज्ञोत्सव च विषा
 णा मुखोशा कलहोत्सव पुरुषोत्सव चारीशा गवान वतुशा उत्सव ॥ २९२ ॥ बाल्याशाको
 उछाहा यज्ञार्णु सूर्यको उछाहा कलहार्णु स्वाधीको उछाहा समस वेश्यार्णु गाई
 को उछाहा कमलोद्याम यानु ॥ २९३ ॥ अग्निहोत्र फल वेद शीलवृत्ति फल श्रुत रतो पुत्र
 फलाना रि दत्तभुक्त फल धन ॥ २९४ ॥ वेदको फल अग्निहोत्र हुनु पुराण मुन्याको फल श्रित
 व्रत हुनु स्त्रीको फल रति पुत्र हो धर्मको फल दिन यानु ॥ २९५ ॥ अग्निर्दहीत तापेन सूर्यो दहीत रा

॥ वाक ॥ शिर्षाभे रागाद हीतदशेन तपसावाह्यगोदेहेन ॥ २८६ ॥ आगोकोतालेपोलछन सूर्यकोकोर
॥ २८७ ॥ शालेपोलछन रागातेदराड गीरपोल छन वाह्यगोलेतप श्यालेपोलछ ॥ २८८ ॥ शनशाकेपु
 तंमांस करेगा मथितदधि तर्ज्या दन्नघृष्टं व तुल्यगोमांस भक्षमा ॥ २८९ ॥ नालुपाटकोत
 कीर्ति मय्याकोमांस तर्जनी अगुठि दातमांस न हातहमथ्याको दधि यीतगोमांसतुल्यक्ष
 २९० ॥ नहत्या नमतिदद्याद् दान्यमाने नद्रश्येत् शकान्नय पीरत्यज्य भुक्षमांसं यथीष्ट
 २९१ ॥ आकुलेकाठनेछेन वचनदिनेछेन मान्याकोहिनेछेन यो नीरु शकाछोडि मा ॥ राम ॥
 मुख्यायले पापछेनहयथिछि ॥ २९२ ॥ निमांसभक्षगोदोष नमद्यनवमेथुन प्रहोत्रोवभ्रताना ॥ २९३ ॥

निहोत्रस्तमहाफल ॥ २९४ ॥ मासुखायोको मोटरखायोको मेथुनगव्याको पापतोछेन परतु
 छोया वेड पुण्यछ ॥ २९५ ॥ चतु मागा पर्यन्त योदद्यात्पुथिविमामां नखोदचा पियोमा
 सी तुल्यमेतद्विदुर्वुधा ॥ २९६ ॥ चारमसुदले वीठियाका पुथीवा दानादियाका पुण्य जोमांस
 खांदेनत्योपाउछ ॥ २९७ ॥ अग्निपरास्त्रियोसूखा सर्पराज कलानिव नित्यमेवापचारेन सद्य
 प्राणा हराशिघट ॥ २९८ ॥ आगो प्राणि स्त्री सूर्य साप राज इनले सदाउपचार गीरआगाह
 रगागछेन ॥ २९९ ॥ भुक्षमांसस्त्रियावृद्धा बालकस्तदगोदधि प्रभोतेमेथुन निद्रा सद्यप्राणा
 हराशिघट ॥ ३०० ॥ शकाकोमांस वीठि स्त्री विहानकाघांस बालोदधि विहानकोमेथुन र

॥ चक्र ॥ निरुद्धा स्त्रीनेथोकले चौडे प्राणाले ॥ २९५ ॥ सद्योमासं घृतं सद्यो वालस्त्री क्षीरभोजनं उ
॥ ५५ ॥ होदकं तरुच्छाया सद्यप्राणकशागि यत् ॥ २९६ ॥ ओम्मा मासु ग्राहिघृतं तद्गुणोत्तरे दु
दभाट् रुस्यकोच्छाया तातोपानि योष्ट्योकले चौडे प्राण रक्षागर्ध ॥ २९७ ॥ अत्राद्य
सुगुणापिष्टं पिष्टं दस्य गुणापयः परमोद्य गुणामास मासादस्य गुणा घृत ॥ २९८ ॥ अत्र
को आथगुण गीतकोष्ट रीतिवर्हि आठ गुणा वरुता दुदमाष्ट दुदचाहि आथगुणा वरु
ता मासुमाष्ट मासुचाहि आठ गुणा वरुता घातुमाष्ट ॥ २९९ ॥ पचिषि उर्वनद्वयनिर्त धो ॥ राम ॥
लुब्ध श्वयोनर अभिसानिच कामिन् गुह्येद्वयितथैवच ॥ ३०० ॥ रीतिपात्र जनावाहिनास ॥ ५५ ॥

हृष्ट कोकोभया अतिलोभि अहंकारि छिन्नार छिचगे गुह्येनद्यागान्या ॥ ३०१ ॥ गो
भिर्विप्रेष्वेवैश्व सतीभि सत्यवादिभि अलुब्धदानशी तैश्च गप्तीभर्था र्यते महो ॥ ३०२ ॥ गा
इवात्मगा मती वेद सत्यवादि अलोभि दाता रीति सार्त्तजप्रीतिविधा राग र्याकोष्ट ॥ ३०३ ॥ अ
मोर पोहसंमोर सारिमत चतुष्टय काश्यावास सतासंगा गंगाभ शंभू पुजनसु ॥ ३०४ ॥ यस्य अमार
संसारमा गा चारथोकष्ट क्याक्या भया काश्यावासगर्नु श्रीमहोदयको पुजागर्नु साधुसंगवदनु
गंगाजल पिडनु रीतिमाष्टनु ॥ ३०५ ॥ शीतवीचान कासार संगेहे रीतिशतकं समाप्तं ॥ ३०६ ॥
स्वीतिश्रीगन्धत् ॥ ३०७ ॥ रीति मार्गवादि ॥ ३०८ ॥ मार्गवाहात् तोलवद्वया भवानोक्तं भवति लेख्ये

॥ वान ॥ केपिस्तकहा ॥ **॥** अष्टादा अश्रुताममदोयोनियते ॥ **॥** गजेवराहं द्रव
॥ थप ॥ मे सह कृष्णपथव स्मरके तिथिवाशिनि लोचनानक सिद्धि ॥ **॥** शम्भ ॥ **॥ राम ॥**
 यम्प्राश्नक कर्मलोचनगुरु होला सासानी मद्रा जन्म वासु लारतस



आशा अरु वाथि
 2289 ८
 ASHA ARCHIVES